Chap-6

षष्ठम् अध्याय

आर्थिक एवं शैक्षणिक हास्य-व्यंग्य काव्य

षष्ठम् अध्याय

आर्थिक एवं शैक्षणिक हास्य-व्यंग्य काव्य

1. आर्थिक व्यंग्य

1. रिश्वत
2. महँगाई
3. बेरोजगारी
4. घोटाले
5. मिलावट

2. शैक्षणिक व्यंग्य

1. आज की शिक्षा व्यवसायी बनी
2. आज के शिक्षक कर्तव्य विमुख
3. आधुनिक युग के छात्रों का सांस्कृतिक मूल्य पतन
4. आधुनिक शिक्षा पर व्यंग्य
5. कवि-सम्मेलन

षष्ठम् अध्याय

आर्थिक एवं शैक्षणिक हास्य-व्यंग्य काव्य

1-आर्थिक व्यंग्य

आधुनिक युग में समाज के बदलते हुए परिवेश में चारों तरफ विकृतियों, विद्रूपताओं का समावेश हो गया है। निर्वाह करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। आज समाज के दूषित वातावरण और बढ़ती हुई महँगाई के कारण शोषण की प्रवृत्ति इतनी प्रबल और व्यापक हो गयी है कि सामान्य जनता आर्थिक शिकंजे में जकड़ रहीहै। आर्थिक विषमता के रूप में समाज के हर वस्तुमें मिलावट है। कोई वस्तु शुद्ध रूप में उपलब्ध नहीं है। आधुनिक युग में गरीब, पीड़ित, शोषित, मजदूरों, किसानों की समस्यायें बढ़ती जा रही है। आधुनिक कवियों ने आर्थिक विषमताओं पर व्यंग्य द्वारा दृष्टिपात किया है -

1. रिश्वत :-

रिश्वत हमारे देश में अभिशाप बनकर फैलती जा रही है। सरकारी अफसरों को रिश्वत लेना उनका धर्म बन गया है। अफसरों का सिद्धान्त बेईमानी, रिश्वत लेना ही रह गया है। रिश्वत की आमदनी क्षणिक है, जितनी शीर्घता से मनुष्य उसको बटोर सकता है, बटोरता है इस संदर्भ में हुल्लड़ मुरादाबादी ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है -

मेरे पास
इन्कमटैक्स का नोटिस आया
आपकी इतनी हिम्मत
कि कवि होते हुए भी
आपने नया मकान बनाया
इंस्पेक्टर साहब
कलकत्ता से लेकर भोपाल तक
मैंने लोगों को हँसाया है

यह मकान मैने ईट-गारे से नहीं
अपने खून-पसीने और
आँसूओ से बनाया है।
वह बोला अपना फर्ज अदा कर रहा हूँ।
पाँच हजार जल्दी दे दो
अगर इन्कमटैक्स से पिंड छुड़ाना है
मुझे अभी और पचास नए मकानों की
तफतीश के लिए जाना है।
मैने कहा- 'क्यों नहीं जाइएगा?'
आखिर आपको भी तो
नया मकान बनाना है। 1

आज भारतीय समाज की यह स्थिति है कि यहाँ पर कोई ईमानदार व्यक्ति नहीं मिल सकता है। किसी भी काम के लिए सरकारी कार्यलयों में बिना कमीशन के सफलता नहीं मिल सकती है और यह कमीशन (रिश्वत) का सिलसिला पूरे देश में हर कार्यालय में व्याप्त है। भारतीय समाज में यह एक सफल व्यवसाय बन गया है। इस विषय पर कवि हरि जोशी ने व्यंग्य किया है-

देश में कमीशन बैठ रहे हैं
समाज में नए-नए उठ रहे हैं
कार्यालयों में चल रहे है।
एक ने कमीशन खाया,
दूसरे ने बड़े कमीशन से छोटे को दबाया,
कमीशन बिना इस देश में कुछ हो नहीं सकता। 2

आज का सामाजिक परिवेश में चारो तरफ भ्रष्टाचार फैलने से अनेक विकृतियों का समावेश हो गया है। रिश्वत के बढ़ते हुए विकराल रूप से पूरा समाज अस्त-व्यस्त हो गया है। थोड़ी जगहों से लेकर ऊँचे कार्यालयों तक रिश्वत का ही बोलबाला है। आज के अर्थ युग में सबसे ऊँचा स्थान रिश्वत का ही है। इस संदर्भ में हुड़दंग नगीनवी ने व्यंग्य लिखा है।

ओउम् जय रिश्वतीखोरी, स्वामी जय रश्वितखोरी
लोग कहें काला तुमको, तुम श्री देवी से गौरी

ओ3म् जय....

अफसर हो या लाला, सब तुम्हारे ही पट्टे
कानून ताक पर रखकर, दाँत करो सबके खट्टे
आदिकाल से पूज्यनीय हो, हे बाला हे छोरी
ओ3म् जय.....

कृपा आपकी होय, दरोगा रक्त से अंदर कर दे,
जीवित को मुर्दा, मर्दे को घोषित जिंदाकर दे
तुम हो पूरा कहूँ, हम जनतावासी है तेरे
ओ3म् जय....3

आज के सामाजिक परिवेश में रिश्वत खोरी दिन-प्रतिनिद बढ़ती ही जा रही है। पूरे देश में शासक, नेता से लेकर सरकारी अफसर, सभी कार्यालयों में इसका रूप देखने को मिलता इसके कई नाम है कही घूस, भेंट आदि शब्दों से सम्बोधित करते है। आधुनिक युग के अफसर रिश्वत लेना ही अपना सिद्धान्त समझते है। इनसे नीचे के लोग इन्ही के पदचिन्हों पर चलकर सीख लेते है। समाज की बढ़ती हुई अव्यवस्था पर कवि अशोक शर्मा ने व्यंग्य अभिव्यक्त किया है -

भूल गए सब रीति-रिवाजें
नए युग की नई आवाजें
नए युग की डगर देखिए
रिश्वतखोर अफसर देखिए
भ्रष्टाचारी में डूबे हैं
कलयुग के दफ्तर देखिए
अपने नाम की आवाजें सुनकर
एक प्रत्याशी आगे बढ़कर
क्लर्क ने अफसर तक भेजा
अफसर ने चश्में से देखा
बोला बेटा काम कठिन है
बीस हजार तक नामुमकिन है
हे रिश्वती-विधाओं के ज्ञाता
दीन-दुखियों के भाग्य विधाता

मेरा मामा घोचूलाल भी
मेरी बस्ती का नेता है
वो ही रिश्वत लेता-देता है
तेरे पास अभी भेजूँगा।
उछल पड़ा वो भ्रष्टी अफसर
घोचूलाल का रिश्ता सुनकर
जिसकों मैंने गुरु है माना
उसको कैसे शिक्षा दूँगा
जिससे रिश्वत लेना सीखा
उससे कैसे रिश्वत लूँगा। 4

आज के सामाजिक परिवेश में भ्रष्टाचार बढ़ता ही जा रहा है। समाज में रिश्वत का इतना महत्व है। कि इससे कितने बड़े-बड़े काम हो जाते है। एक खूनी भी न्यायलय में लम्बी रिश्वत देकर बच जाते है और समाज में आतंक को बढ़ावा देते है। समाज के गरीब मजबूर व्यक्ति यह सोचकर सन्तुष्टी करता है कि कुदरत के न्यायलय में उसे न्याय मिलेगा। आधुनिक युग की विपरीत परिस्थितियों पर कवि हुल्लड़ मुरादाबादी ने व्यंग्य किया है -

रिश्वत देकर बच गया, जिसने करके खून।
अब उसको देगा सजा, कुदरत का कानून॥ 5

भारतीय समाज में चारों तरफ रिश्वत की आपाधापी मची हुई है। समाज में सभी सरकारी कार्यालयों में रिश्वत दिये बिना कोई कार्य होना सम्भव नहीं है। समाज में चारों तरफ हर व्यक्ति रिश्वत के रंग में रँगा हुआ है। इस संदर्भ में कवि आशाकरण अटल ने व्यंग्य किया है कि इस नवीन युग में इंसान की तुलना में जानवर ईमानदार दिखाई देने लगा है।

एक चक्रवर्ती चोर
होटल में बैठा खाना खा रहा था
उसी समय पुलिस का एक दस्ता
खोजी कुत्ते की मदद से
उसे खोजता हुआ आ रहा था
चक्रवर्ती इसलिए

कि वह कभी पकड़ा नहीं गया
और पकड़ा इसलिए नहीं गया
क्योंकि अभी खोजा नहीं गया।
कुत्ता सूघते सूघते
ज्यों ही चोर के सामने आया
तो उसने वह मुर्गा
जो अपने लिए मंगवाया था
कुत्ते के आगे सरकाया।
मगर कुत्ते ने यह रिश्वत लेने से
साफ इंकार कर दिया
यह देखकर वह चोर हँस दिया
तो मैने उससे पूछा-
तुम्हें किस बात पर हसंना आया?
तो कुत्ते की तरफ देखकर वह बोला-
जीवन में पहली बार
पुलिस विभाग़ में
एक ईमान कर्मचारी पाया
इस बात पर हंसना आया। 6

नवीन सामाजिक परिवेश अनेक विकृतियों की अधिकता पायी जाती है। रिश्वत रूपी व्यवसाय पूरे समाज में छा गया है। रिश्वत देकर कसूरवार व्यक्ति आराम से छूट जाता है आज के व्यक्ति रिश्वत रूपी हथकण्डों को अपनाकर अपना स्वार्थ पुरा करते हैं। आज की पीढ़ी को गलत कार्यो को करने में कोई डर नहीं रहा। क्यों कि सजा से मुक्ति पाने के लिए रिश्वत रुपी युक्ति उनके पास है। कवि आशाकरण ने व्यंग्य द्वारा कटाक्ष किया हह

पैसा कम पास हो तो सिर्फ दो रुपयों में ही
अच्छा खाना-खाने का तरीका सीख जाइए।
पहले आप सूप की दो प्लेट मँगवाके पिए
पीके दो पुलाव दो पराठे मँगवाए।
और क्या ले आऊँ बैरा पूछे तो ये देना बोल

पैसा नहीं पास दो पुलिस वाले लाइए।
पुलिस के सिपाही थाने ले जाएंगे रास्ते में,
दोनों को रूपये दो थमाके छूट जाइए। 7

हमारे भारतीय समाज में अर्थयुग की प्रधान है। हर व्यक्ति धन की तरफ भाग रहा है। आर्थिक विषमतायें बढ़ती जा रही है। यहाँ पर हर व्यक्ति की इच्छाएँ बढ़ती जा रही है। जिसे पूरा करने हेतु व्यक्ति अपना धर्म, ईमान, सिद्धान्तों को भूलकर सिर्फ पैसा कमाना अपना सिद्धान्त माननें लगें है। इसकी पूर्ति हेतु काले कारनामे करते है। अफसरों को रिश्वत देते है। आज भारतीय समाज में रिश्वत को उच्चश्रेणी में रखा जाने लगा है। इस संदर्भ में कवि आशाकरण की व्यंग्य पंक्तियाँ इस प्रकार है-

कुछ उल्टे-सीधे फंद करो
आनंद करो।
मेहनत-वेहनत सब बंद करो
आनंद करो।
ईमान बड़ा ही सस्ता है
सच्चाई की हालत खस्ता है
दौलत पाने का रस्ता है
काले बाजार बुलंद करो
आनंद करो
वेतन के पैसों के प्यारे
घर-बार चलाना मुश्किल है
घर-बार अगर चल जाए तो
बच्चों को पढ़ाना मुश्किल है
गर रोज़ सिनेमा जाना है
गाड़ी और बंगला पाना है,
या बैंक बैलेंस बढ़ाना है
तो रिश्वत लेना पसंद करो
आनंद करो। 8

आधुनिक समाज में आर्थिक स्थिति दिन पर दिन बिगड़ती जा रही है। पैसे के लिए धर्म-सम्प्रदाय आपस में लड़ते-झगडते रहते है। आज के समाज में रिश्वत

को सर्वोपरि माना जाता है। रिश्वत के कारण समाज की न्याय व्यवस्थायें बिगड़ती जा रही है इस परिस्थितियों को देखकर अशोक अंजुम ने व्यंग्य किया है -

मंदिर लेकर पंडित आएं,
मस्जिद लेकर झगड़े मुल्ला
लोकतंत्र में डर काहे का,
कोर तमाशे-खुल्लम-खुल्ला।
करो मिलावट, रिश्वत खाओ,
हथखण्डों से - सब कुछ पाओ
दो नम्बर का जो कुछ आए
कुछ हिस्सा ऊपर पहुँचाओ।
फिर कोई क्या-कह सकता है?
हुई व्यवस्था-ढिल्लम ढुल्ला। 9

आज भारत की स्थिति डामाडोल हो गई है। चारों तरफ धन प्राप्ति हेतु लोग अपना सिद्धान्त भूल गये है। भ्रष्टाचार दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। लोग धन कमाने हेतु गलत हथकण्डों का प्रयोग करते है। आज के युग में असंभव से असंभव कार्य रिश्वत से पूरे हो जाते है। रिश्वत हमारे देश में अभिशाप बनकर फैल गई है। इस संदर्भ में कवि असोक अंजुम ने व्यंग्य द्रष्टव्य किया है -

डोल रही है भारत-नइया,
निद्रा में है मग्न खिवइया।
रूदन उठा है गली-गली में,
संसद में है ता....ता. थइया।
त्रस्त यहाँ अनगिन पंचाली,
आ भी जाओ कृष्ण-कन्हइया।
चारो ओर शिकारी फैले,
डरी-डरी है सोन चिरइया
हम भी वोट छीन सकते है
टिकट दिलाना हमको भइया।
जिनकी जेब भरी है, उनके,
काम बनाये रिश्वत-मइया। 10

आधुनिक युग में रिश्वत का जाल पूरे देश में फैला है। ईमानदारी लुप्त होती जा रही है। हर आदमी काम करने के लिये कमीशन खाता है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति इससे प्रभावित है। बिना रिश्वत के कोई भी काम होना सम्भव नहीं है। अशोक अंजुम ने इस पर व्यंग्य द्वारा कटाक्ष किया है-

आप अभियन्ता हैं
सृष्टि के नियन्ता है
निर्माण करते है
बेजान चीजो में
जान डाल देते हैं
खाते कमीशन से
पीते कमीशन से
सोते कमीशन से
पीते कमीशन से
सोते कमीशन से
जीते कमीशन से
ठेकेदार की नइया
इनसे ही चलती है
लेकिन लिफाफे बिन
दाल नहीं गलती है
ठेकेदार से इनके
जन्मों के नाते है
पूछों तो गाते है
और कुछ मै जानता नहीं,
दिल है कि मानता नहीं। 11

रिश्वत हमारे देश में अभिशाप बनकर रह गई है। समाज में चारों तरफ रिश्वत का ही बोलबाला है। आजकल डिगरी का कोई महत्व नहीं रह गया है। कम पढ़े-लिखें ज्यादा पैसे देकर नौकरी हासिल कर लेते है। समाज की इस प्रकार की अव्यवस्था को देखकर कवि अशोक अंजुम ने व्यंग्य किया है -

ऊधौ, डिगरी हमें चिढ़ावै।

जो रिश्वत नो नोट दै सकें, सोई सरविस पावै॥
भाई-भतीजावाद के बल पर अनपढ़ मौज उड़ावै।
दस पढ़ निकरें चपरासी के लाखों म्हों मटकावै॥
लोकतंत्र की गति निराली, गधापंजीरी खावें।
पी.एच.डी. की ऐसी-तैसी, रिक्शा चलौ चलावै॥ 12

कवि हुडदंग नगीनवी, ने समाज में व्याप्त आर्थिक विषमताओं को देखकर व्यंग्य द्वारा स्पष्ट किया है। कि आज के नवीन युग में रिश्वत का ही बोलबाला है। जो व्यक्ति इसे अपना लेते है। खुशी और आनंद का जीवन बिताते है। रिश्वत ने समाज की परिस्थितियों को झकझोर कर रखा दिया है।

जेबों में घुस जाती है।
तन मन को सहलाती है।
जिसको भी यह होती प्राप्त,
हृदय खुशी से होता व्याप्त।
तीस दिनों तक यह मतवाली
घर का खर्च चलाती है
वह रिश्वत कहलाती है। 13

भारत में स्वतंत्रता के बाद समाज में चारों तरफ भ्रष्टाचार का समावेश हो गया। समाज के कर्णधार देश की चिन्ता न करते हुए अपना स्वार्थ पूरा करने में लगे हुए है। ऊपर से लेकर सरकारी अफसर धन की अधिक लालसामें रिश्वत को व्यवसाय का रूप दे बैठे है। ये अपने सिद्धान्तों को छोड़कर खूब पैसा कमानें में लगे है। उन्हें देश की कोई चिन्ता नहीं है। समाज की विपरीत परिस्थितियों पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

आओ भारत वीरो, आओ,
देश-धर्म पर बलि-बलि जाओ।
स्वतन्त्रता का लाभ उठाओ।
हम भी खाएँ, तुम भी खाओ।
बिजलेंस ने छापा डाला,
कितना व्हाइट, कितना काला।
ले-दे कर हो गया फैसला,

खुश हैं अफसर, खुश है लाला।
कुरसी छुटी छुट जाने दो,
हंडिया फूटी, फुट जाने दो,
बहुत करी जनता की सेवा,
अब हमको मेवा खाने दो। 14

आज के बदलते हुए परिवेश में विकृतियों का समावेश हो गया है। समाज की स्थिति यह हो गई है। कि एक भी ईमानदार व्यक्ति ढूंढ़ने पर नहीं मिलता है। दुर्भाग्य से यदि किसी कार्यालय में राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत, कर्तव्य निष्ठा, सिद्धान्तवादी भ्रष्टाचार विरोधी कर्मचारी आ जाता है। तो उसे बेईमान कर्मचारियों के साथ काम करना मुश्किल हो जाता है। इस संदर्भ में कवि मूलचंद शर्मा नादान ने लिखा है-

रिक्शेवाले ने पांच रूपए बतलाए,
बाबूजी बौखलाए
जोर से डाँटा -
इतना भ्रष्टाचार
तीन की जगह पाँच माँग रहा है मक्कार।
रिक्शे वाला अखड़ा
उसने उठता हुआ हाथ पकड़ा
बोला-बाबूजी, तैश में मत आइए,
मेरी बात सुनिए, गुस्सा मत दिखाइए7।
क्या उन पर गुस्सा दिखाते हैं
जो बिना मेहनत किए
लाखों की रश्वित खाते हैं।
उन दफ्तरों में जाइए
जहांतालों से बंद फाइलें चाँदी की चाभी से खुलती हैं
किसी अदालत में गए है श्रीमान।
गुस्सा दिखाना है तो वहाँ दिखाइए
न्याय-मंदिरों में लगे,
रिश्वत के काला दाग को मिटाइए।

अपने गुस्से को सार्थक बनाइए। 16

आधुनिक युग में समाज में अनेक परिवर्तन होते जा रहे है। समाज में भौतिकता की अधिकता होती जा रही है। व्यक्ति को अपनी सुख सुविधाओं के साधन को इकट्ठा करने की लालशा हमेशा रहती है। अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिये मनुष्य अधिक धन कमाना चाहता है और इसके लिए रिश्वत की आमदनी क्षणिक है। जिनती शीघ्रता से मनुष्य के सभी काम संभव हो जाते है। इस विषय पर कवि गुरु सक्सेना ने व्यंग्य किया है-

जय नोट कृपाला, दीन दयाला, तुम सबके हितकारी।
हरप्रित महतारी, पुलकिल नारी, तनखा रुप निहारी
तुम बिन स्वामी, अतिबदनामी, कदम-कदम पर खामी।
नौकर सरकारी, रिश्वत धारी, सब तुम्हरें अनुगामी।
पुल सड़क पचावै, सजा न पावे, अपराधी गुणगावै।
जे अति नालायक, बनकर लायक, शासन सर्विस पावैं।
तुम से ब्रत-पूजा, तुम बिना दूजा, और न कार्य-करते।
प्रमुशन करी, ट्रासफर हारी, गवन के कष्ट हरन्ता।
सब पाप नशावन, तुम अतिपावन, तजउ ये सूक्ष्म सरुपा।
वेतन अति छोटा, खर्चा मोटा, डूबत तनमन कूवा।
खुश हो घरवाली, मने दिवाली, छूटे झगड़ा टंटा।
फेरें धन माला, जायें न शाला, बजत रहे चहे घंटा। 17

रिश्वत हमारे समाज में विकराल रूप धारण कर चुकी है। रिश्वत मनुष्य का एक अंग बन गयी है। इसके बिना मनुष्य का कोई भी कार्य होना सम्भव नहीं है। रिश्वत लेकर-देकर इसका सहारा लेकर व्यक्ति सुख चैन का जीवन व्यतीत करता है। और जो व्यक्ति रिश्वत से दूर रहता है उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस वास्तविकता पर डॉ. अजेय जनमेजय ने व्यंग्य किया है -

सच्चे में है अपादा, काले धन में चैन
ले-देकर सब हो, चैन मिले दिन-रैन
बची रहेगी इस तरह, तेरी लूट-खसोट
आफीसर को भी खिला, खूब कमा कर नोट। 18

भारतीय समाज में अंग-अंग भ्रष्टाचार की लपेट में है। ऐसा प्रतीत होता है कि

रिश्वत के बिना आगे बढ़ना असम्भव है। रिश्वत दिये बिना समाज में तिनका भी नहीं हिलता है। किसी सरकारी कार्यालय में जाते ही दरवाजे से ही रिश्वत देना शुरू हो जाता है और काम होने तक न जाने कितनी घूस देना पड़े यह आदमी को सोचना मुश्किल है रिश्वत को बढ़ते विकराल रूप पर कवि संत हास्यरसी ने व्यंग्य किया है-

गेट पे जो चपरासी समझो गणेशजी है,
गुलदाना लड्डू उसे जाते ही खिलाइए।
दफ्तर में घुसते ही मिलेंगे, क्लर्क देव,
विष्णु समझ उन्हें खड़ी चटाइए।
पारवती नाम की जो है घूर रही,
संतोषी मां समझ के फाइल दिखाइए।
तीर्थ-यात्रा का फल, कल ही मिलेगा तुम्हें,
अफ़सर की गद्दी नीचे, गड्डी खिसकाइए। 19

भारतीय समाज को रिश्वत ने अपने शिकजे में ऐसा जकड़ रखा है कि रिश्वत के बिना मनुष्य को चैन की जिन्दगी जीना मुश्किल हो गया है। रिश्वत के बिना कोई भी सरकारी दफ्तरी सूने-लगते है समान के इस परिवर्तन को देखकर कवि पं. सुरेश नीरव ने व्यंग्य किया है।

बगावत करेंगे तुम्हारे ही चमचे।
'कमीशन' दलालो से क्यों खा रहे हो। 20

आधुनिक युग में सामाजिक जीवन में अनेक विकृतियों का समावेश हो गया है। 'रिश्वत खोरी' पूरे समाज में फैलती जा रही है। रिश्वत का स्वाद एक बार जिसके मुँह में लग जाता है। फिर वह स्वाद छूटता नहीं है। चाहे किसी भी रूप में हो रिश्वत के बिना आज के मनुष्य का जीवन अधूरा हो गया है। इस संदर्भ में कवि ब्रजकिशोर 'पटेल' लिखते है -

बड़े साहब के सिर पर सवार
सचाई, इंसाफ और ईमान
छोटे साहब की
बड़ी धाक थी
'रिश्वत' लेने की कोशिश
खतरनाक थी

एक बार
रिश्वत का स्वाद चख लेने के बाद
क़ोइ रिश्वत के बिना
रह सका है भला
छोटे साहब का दिमाग चला।
कभी अपने
कभी अपनी पत्नी के
कभी बच्चों के जन्म-दिन के उपलक्ष्य में
पार्टिया आयोजित की जाने लगीं
रिश्वत
अब गिफ्ट की शक्ल में आने लगी। 21

समाज के बदलते हुए परिवेश में आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ती जा रही है। कि धन की कमी के कारण व्यक्ति को जीवन निर्वाह करना मुश्किल है। इस कमी को पूरा करने के लिये व्यक्ति रिश्वत को अपना सिद्धान्त बना बैठा है। इस संदर्भ में कवि रऊक परवेज ने व्यंग्य किया है -

जो घूंस खाऊं तो घर का मेरे भला हो जाए,
सभी का पेट भरे ऐसा, सिलसिला हो जाए। 22

भारतीय समाज में रिश्वत की बढ़ती हुई व्यापकता को देखकर कलामे 'हकिम' ने व्यंग्य किया है समाज में रिश्वत को सर्वश्रेष्ठ रूप में रखा जाने लगा है। पैसे वाले लोग गरीब इंसान पर कोई हमदर्दी नहीं रखते हैं। उनका धर्म सिर्फ पैसे कमाना है। समाज के बदलते परिवेश में गरीब इंसान को जीना मुश्किल हो गया है।

गरीब का है शोर हम सु जहां में,
न मिलता है भरपेट खाने को मुल्लक।
हुए गरचे दौर हुजूरों, के देखा,
गरीबों की फरियाद से खेलते हैं।
कमा करके इज्ज़त उन्हें हमने बख्शी,
उसी जिंदगी में ढले, पल रहे हैं।
हमने बनाए ये मिट्टी के लौंदे,
हमारी ही बुनियाद से खेलते हैं।

हुए लाल चर्चे मगर गम नहीं कुछ।
बगलगीर होने की किश्मत लिए है।
यतीमों की दुनियाँ से उनको गरज क्या,
वो हंसते दिलेशाम से खेलते है।
इधर टैंक्स, रिश्वत से दम घुट रहा है,
उधर चाह की चुस्कियाँ चल रही हैं। 23

भारतीय समाज में शिष्टाचार, ईमानदारी, सिद्धान्तं आदि को कोई महत्व नहीं रह गया है। इस समाज में सिर्फ रिश्वत ही व्यक्ति का ईमान, धर्म बनकर रह गयी है। आज के व्यक्ति का कमाने का सबसे अच्छा साधन रिश्वत है। आधुनिक युग में खादी वस्त्र पहनकर अफसर अपने गुनाह छिपा लेते हैं।

समाज में 'रिश्वत' रुपी भ्रष्टाचार को बढ़ते हुए देखकर कवि रामकिशोर 'मेहता' ने व्यंग्य किया है -

स्वामी सब संसार में, रिश्वत का व्यवहार।
मुट्ठी गर्म जो कर सके, साधे सब व्यापार॥
साधे सब व्यापार, फसल नोटों की काटे।
दस-दस गुना कमाये, नोट जो रिश्वत में बांटे॥
कह मेहता कविराय, छुपे सारी बदनामी।
रिश्वत ले पहनो खादी का धोती कुर्ता स्वामी॥ 24

आज भारतीय समाज रिश्वत के अभिशाप से त्रस्त है। समाज का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो रिश्वत से अछूता हो। किसी भी सरकारी कार्यालय में ईमानदार अफसर मिलना असम्भव हो गया है यदि धोखे से कहीं ईमानदार अफसर पहुँच जाता है। तो उसके सहयोगी कर्मचारी उसके सामने बाधाओं का पहाड़ उपस्थित कर देते है। और यदि ईमानदार अफसर डरे बिना काम करना चाहता है तो मातहम लोग उपर से दबाव उसको अपने रंग में रंग लेते है। रिश्वत रूपी व्यवसाय को बढ़ते देखकर कवि शैल चतुर्वेदी ने व्यंग्य की अभिव्यक्ति की है -

बात उन दिनों की है जब हम
खाऊ डिपार्टमेन्ट में कमाऊ पोस्ट पर थे
मगर बाइ द वे ईमानदार अफ़सर थे
हमारे सीनियर कालीग ने हमें समझाया-

'इस पोस्ट पर रहकर भी कुछ नहीं कमाया
तो हीरा जनम व्यर्थ गँवाया
कमाना न आता हो तो मै सिका ढूँगा
बदले में कमाई का टैन परसैंट लूँगा।'
जब उसकी शिकायत बड़े अफ़सर से की
तो वे बोले-
'समझ में नहीं आता, किसने तुम्हें
इस डिपार्टमेन्ट में भरती कर दिया
सच पूछो तो
हमारे सीने पर बोझ घर दिया
प्रायमरी स्कूल के टीचर लगते हो
अपने केबिन में पहुँचे तो एक बाबू बोला-
'साहब !'
अगले महीने बेटी की शादी है
पित्रिका आपके घर भिजवा दी है।
हमने बधाई दी, तो बोला-
'कोरी बधाइसे काम नहीं चलता
सड़ा से सड़ा दामाद भी आजकल
एक लाख से कम में नहीं मिलता
बड़े साहब को देखो
अपनी गाजर जैसी बेटी के लिए
बैंगन जैसा दूल्हा पचास लाख में लाये हैं
आप जरा से ढ़ीले हो जायें
तो मेरी बेटी के हाथ पीले हो जायें।'
हमने कहा -
'तुम्हारी बेटी के हाथ
पीले करने के लिये
अपना मुँह काला कर लूँ?'
वह बोला -

'साफ-साफ कहों न खायेंगे, न खानें देंगे
आप जैसे कई आये और आते रहेंगे
लेकिन खाने वाले खाते रहेंगे॥'
हमने कहा -
'खाके बताओ।'
वह बोला -
ओसा... ब। ताव मत दिखाओं
दफत्र बाबू चलाता है
अफ़सर तो बस अगूँठा लगाता है
कहीं अगूँठे के ऊपर काला-पीला हो जायेगा
तो आपका ईमान ढ़ीला हो जायेगा
बाबू पट जाये तो ठीक बनी, बम होता है। 25

समाज में दिन पर दिन 'रिश्वत' रूपी भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। कोई भी सरकारी कार्यालयों में बिना रिश्वत के तिनका भी नहीं हिल सकता है। ये अफसर हर काम करने के लिये अपने दाम निश्चत किये रहते है। रिश्वत रूपी भ्रष्टाचार से गरीब को अनेक कठिनाइयों को झेलना पड़ता है। सरकारी अफसरों को गरीब जनता पर कोई तरस नहीं आता है। इस संदर्भ में अशोक अंजुम की व्यंग्य पंक्तियाँ इस प्रकार है-

बड़े बाबू।
हर फाइल पर खाते हो
बिना वजन के
एक भी फाइल आगे नहीं बढ़ाते हो
बिना चाय-पानी
आपके हाथ नहीं हिलते है
एक-एक दस्तखत के
मनचाहे दाम मिलते है।
पेंशन की फाइल, मुआवजे की फाइल
बिजली की फाइल, पानी की फाइल
ग़रीबों की एक-एक कहानी की फाइल

और इन फाइलों का ढ़ेर
आपकी ओर बड़ी आशा से ताकता है
किन्तु आपका काइयापन
सामने वाले की जेबों में झाँकता है
इस प्रकार हर पल
रिश्वत की वैतरिणी में लगाते हुए गोता
आपकी साँस नहीं घुटती
मन नहीं रोता?
बाबूजी बिज बिजाये
क्या करें कन्ट्रोल ही नहीं होता? 26

आधुनिक युग में 'रिश्वत' भ्रष्टाचार का विकराल रूप लेती जा रही है। सरकारी कार्यालयों में अफसर 'रिश्वत' को अपना व्यवसाय बनाये हुए है। देश खोखला होता जा रहा है परन्तु उनकी इच्छायें लालसायें पूरी नहीं होती है। इस संदर्भ में काका हाथ्ररसी ने व्यंग्य किया है -

अफ़सर जी के पेट की,
नहीं किसी को थाह,
दस हज़ार का खर्च है, दो हजार तनुख्वाह। 27

आज के युग में लोग दिखावे के लिये भी भगवान की पूजा करते है। वास्तविकता में तो भ्रष्टाचार के रूप रिश्वत को महत्व देते है। मनुष्य के जीवन के मूल्य दिन परदिन बदलते जा रहे है। इस पर कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

प्रभुकी पूजा कर रहा,
श्रद्धा से इंसान,
रिश्वत-भ्रष्टाचार के स्वामी हैं शैतान। 28

इस नवीन युग में व्यक्ति रिश्वतरूपी भ्रष्टाचार की ओर अधिक आकर्षित होते जा रहे है। रिश्वत की आमदनी क्षणिक है। जितनी शीघ्रता से मनुष्य बटोरना चाहे बटोर सकता है समाज की इन परिस्थितियों पर काका हाथरसीने व्यंग्य द्वारा कटाक्ष किया है -

रिश्वत रूपी पेड़ को,
जोर-जोर झकझोर,

आँधी के ये आम हैं, दोनो हाथ बटोर। 29

आज समाज में रिश्वत को सर्वोपरि माना जाने लगा है। रिश्वत का सहारा लेकर लोग ऊँचे पदों तक पहुँच जाते है। समाज के शासक नेता कर्णधार जनता के लिये जैसे कार्य करते रहे। आज कीयुवा पीढ़ी वैसा ही करने की सोचती है। इस पर काका कवि ने व्यंग्य किया है-

इंदिरा जैसी कीर्ति दो, नेहरु जैसा नाम,
भोलापन राजीव सा, करूँ देशहित काम
करूँ देशहित काम, बुद्धि भर दीजै ऐसी
वाकशक्ति पाऊँ मैं, अटलबिहारी जैसी
जैसे वी.पी. सिंह, ख्याति ऐसी ही पाऊ
जन-जन रिश्वतरामी के दर्श कराऊँ। 30

आज के अर्थ-प्रधान युग में वणिक-वृत्ति जोर पकड़ती जा रही है। बुद्धि जीवी वर्ग भी इससे अछुता नहीं रहा है। आज के मनुष्य का उद्देश्य धन कामाना है। धन कमाने के लिये 'रिश्वत' एक व्यवसाय बन गयी है। रिश्वत के बल पर चोर, अपराधी बेगुनाह साबित होते है और ईमानदार व्यक्ति गुनहगार समझा जाता है। इस युग में 'रिश्वत' की महिमा निराली है इस पर काका हाथरसी का व्यंग्य द्रष्टव्य है -

शान-मान व्यक्तित्व, का चाहों अधिक विकास,
गाली देने का करो, नित नियमित अभ्यास।
नित नियमित अभ्यास, कंठ को कड़ख बनाओ,
बेगुनाह को चोर, चोर को शाह बताओ।
'काका' सीखो रंग-ढ़ंग, पीने-खाने के,
'रिश्वत' लेना पाप लिखी ऊपर थाने के। 31

आधुनिक युग में 'रिश्वत' रूपी भ्रष्टाचार पूरे समाज में फैलता जा रहा है। समाज का हर क्षेत्र कोर्ट, कचहरी, दफ़्तर, न्यायलय आदि जगहों पर रिश्वत के दर्शन मिलते है। आज के समाज में व्यक्ति की सोच बदलती जा रही है। रिश्वत को ही व्यक्ति एक उच्च श्रेणी में रखते है समाज की चारों दिशाओं में रिश्वत का ही बोलबोला है इस विषय पर काका हाथरसी लिखते है -

कोर्ट-कचहरी, दफ़्तरों में फाइल की धूम
पूजा तेरी सब करें, हो उदार या सूम।

हो उदार या सूम, 'दक्षिणा' लेकर आते,
तब बाबू फ़ाइल के दर्शन उन्हें कराते
कहँ 'काका' तहसील, फौजदारी, दीवानी,
चहुँदिशि तेरा राज, बनी बैठी पटरानी। 32

रिश्वत पूरे देश में अभिशाप बनकर फैल गई है। रिश्वत लेने की लत जिसे एक बार लग जाये। तो उसकी आदत छूटना मुश्किल हो जाता है। इसका कुप्रभाव लगातार बढ़ता ही जाता है और इसका प्रभाव मनुष्य की मानसिकता पर पड़ता है और मनुष्य अस्वस्थ भी हो सकता है। इस बढ़ती हुई बीमारी पर काका कवि ने व्यंग्य किया है -

कहा वैध ने देखकर बड़े साब की नब्ज,
रिश्वत खाने से अधिक, हुई आपको कब्ज।
हुई आपको कब्ज, न इस सीजन में चूको,
शिमला जाकर रिश्वत, के नोटो को फूँकों।
कहँ 'काका' कवि, जब यह रिश्वत पच जाएगी,
पाचन-शक्ति और भी, आगे बढ़ जाएगी। 33

आधुनिक समाज में रिश्वत रूपी भ्रष्टाचार को देखकर काका कवि ने इस पर व्यंग्य किया है। इस नये युग में कानून जैसी न्याय-व्यवस्था भी रिश्वत के हाथों बिक गयी है। रिश्वत देकर बड़े-बड़े अपराधी भी बच जाते है और छोटे कानून की पकड़ में आ जाते है। यदि कोई छोटा अफसर रिश्वत लेते हुए पकड़ा जाता है तो वह लम्बी रिश्वत देकर ही मुक्त हो जाता है। आज के समाज में रिश्वत लेने और देने का किसी को भय नहीं रहा है। इस संदर्भ में काका हाथरसी का व्यंग्य द्रष्टव्य है-

कूटनीति मंथन करी, प्राप्त हुआ यह ज्ञान,
लोहे से लोहा कटे, यह सिद्धांत प्रमान।
यह सिद्धांन्त प्रमाण, जहर से जहर मारिए।
चुभ जाए काँटा, काँटे से ही निकालिए।
कहँ 'काका' कवि, काँप रहा क्यों रिश्वत लेकर,
रिश्वत पकड़ी जाए, छूट जा रिश्वत देकर। 34

भारतीय समाज में रिश्वत की चारों ओर आपाधापी मची हुई है। रिश्वत की

समाज में पूजा की जाने लगी है। रिश्वत के कई नाम है, कही इसे भेंट का नाम दिया जाता है तो कभी यह हक-पानी के रूप में प्रकट होती है। कभी बख्शिस के रूप में, कभी इनाम के रूप में कभी नजराने के नाम से दी जाती है रिश्वत-रानी कविता में काका रिश्वत की व्यंग्यात्कम वन्दना करते है। इस कविता में 'खाऊमल' शब्द व्यक्ति-विशेष के लिए नहीं वरन् खाऊ प्रकृति वालों के लिए प्रयुक्त हुआ है, जिससे व्यंग्य में निखार आया है। आज रिश्वत की व्यापकता इतनी बढ़ गयी है कि शासन, प्रशासन, सरकारी विभाग कोई भी ऐसी जगह नहीं है जहाँ रिश्वत की पूजा नहीं होती।

रिश्वत रानी, धन्य तू, तेरे अगणित नाम,
हक-पानी उपहारऔ, बख्शिश, घूस, इनाम।
बख्शिस, घूस, इनाम, भेंट नजराना पगड़ी,
तेरे कारण, खाऊमल की इनकम तगड़ी।
कहाँ 'काका' कविराय, दौर-दौरा दिन दूना,
जहाँ नहीं तू देवि, महकमा है वह सूना। 35

आधुनिक समाज में रिश्वत रूपी काल दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। इसका रूप छोटा होता है और बड़ा भी। कई छोटे कार्य कम पैसे देकर पूर्ण किये जाते है। और कई बड़ी रकम देकर। इस समाज में यदि कोई व्यक्ति बिना रिश्वत दिये कार्य कराना चाहता तो उसका कार्य पूरा नहीं होता है 'रिश्वत' के बिना इस समाज में एक कदम चलना मुश्किल है। इस संदर्भ में काका हाथरसी ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है -

साले की बारात में, जाना हमें जरुर,
लेकिन साहब ने नहीं, छुट्टी की मंजूर।
छुट्टी की मंजूर, गए डाक्टर पर भागे,
दो रूपए का नोट, रख दिया उनके आगे।
कहँ 'काका' कविराय, पिला रिश्वत की छुट्टी,
उसी समय मंजूर, हो गई अपनी छुट्टी। 36

भारतीय समाज सभी वर्गो में क्षेत्रों में 'रिश्वत' विकराल रूप धारण करती जा रही है। न्यायलय में जहाँ मनुष्य न्याय मिलने की आशायें लगाए रहते है। वहाँ पर रिश्वत रूपी भ्रष्टाचार पूर्णतः बढ़ गया है। देश पतन की ओर बढ़ता जा रहा है। आज न्याय विभाग में कर्मचारी अपनी तनुखा से तीन गुना कमाने लगे है। इस वास्तविकता पर कवि ने व्यंग्य किया है -

न्याय प्राप्त करने गए, न्यायलय के द्वार,
इसी जगह सबसे, अधिक पाया भ्रष्टाचार।
पाया भ्रष्टाचार, मिशन को मसल रहे हैं,
ईट-ईंट से रिश्वत के, स्वर निकल रहे हैं।
कहँ 'काका' जब पेशकार जी घरको आए,
तनुखा से भी तिगुने नोट दबाकर लाए। 37

आज के आधुनिक समाज में रिश्वत का ही बोलबाला है। व्यक्ति को कोई भी कार्य कराने के लिए रिश्वत देना आवश्यक होता है। रिश्वत के बिना कोई भी कार्य सम्भव नहीं है। रिश्वत भी अलग-अलग रुपों में देनी पड़ती है। यदि अधिकारीयों को विस्की की बोतल मिल जाये तो आँख बन्द करके काम कर देते है। आज के सरकारी कर्मचारियों का सिद्धान्त सिर्फ रिश्वत लेना बन गया है। इस विषय पर काकाहाथरसी का व्यंग्य प्रस्तुत है -

नोटों की रिश्वत नहीं, लेता हो हुक्काम,
बोतल रख दो मेज़ पर, सफल होंय सब काम।
सफल होय सब काम, बचन का सीखो ढरा,
व्हिस्की की बोतल में, भर ले जाओ ढरा।
कहँ 'काका' कवि, बड़ी शक्ति रखती है 'वाइन'
आँक मीचंकर, साहब कर देते हैं 'साइन' 38

आधुनियक युग में रिश्वत का रुप दिन पर दिन प्रबल होता जा रहा है। किसी भी सरकारी कार्यालय में ईमानदार अफसर नहीं मिलता है। न्याय मिलने वाले न्याय विभाग में जो 'रिश्वत' के बिना कोई भी कार्य सम्भव. नहीं है। न्याय करने वाले अफसर अपने कर्तव्यों को भूलकर रिश्वत रूपी भ्रष्टाचार की चपेट में आ गये है। न्याय विभाग में 'रिश्वत' की वास्तविकता को देखकर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

मजिस्ट्रेट के कोर्ट में, होने लगी पुकार,
पेशकर के सामने, पहुँचा पैरोकर।
पहुँचा पेरोकर, प्रभो उपकरा कीजिये,
आया एक शिकार, उसे स्वीकार कीजिए।
पुरस्कार है यह, इससे इंकार न करिए,
साधिकार सुखकर, नौट पाकिट में धरिये। 39

आज के समाज में चारों तरफ बेईमानी, भ्रष्टाचार का ही बोलबोला है। समाज की यह स्थिति है कि किसी कार्यालय में यदि एक भी ईमानदार अफसर पहुँछ जाता है। तो उसे काम करना मुश्किल हो जाता है। उसके नीचे वाले कर्मचारी अनेक बाधाओं का पहाड़ बना देते है। उसे अपने रंग में रंगना चाहते है। यदि वह नहीं मानता है तो उसका ट्रान्सफर करवा देते है। इससंदर्भ में काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है।

ईमानी अफसर, को नीचेवलाले बेईमान बना दें,
लालच का पैट्रोल, छिड़ककर, नैतिकता में आग लाग दे।
तू भी खा हमें खिला, या बाँध बिस्तरा-बोरिया,
गणपति बप्पा........ 40

आधुनिक युग में आर्थिक विषमता और धन के बढ़ते हुए महत्व ने कई समस्याओं को पैदा कर दिया है। वह है तस्करी प्रत्येक व्यक्ति के मन में सम्मान और ऐश्यर्व की भावना रहती है। जो केवल धन से ही सम्भव है। धन कमाने की लालसा से व्यक्ति अपने ईमानदारी के पथ से विचलित हो जाते है। आजकल कालाबाजारी ने सरकार की आर्थिक नीतियों को झकझोर दिया है। सरकार इसको जितना ज्यादा रोकने का प्रयास कती है। उनती ही अधिक बढ़ती जा रही है। कानून से बचने के लिए नये नये दाव-पेंच ढूँढ़ लिए गए है। काका हाथरसी ने कालाबाजारी और चोरबाजारी की प्रवृत्ति पर तीखा प्रहार किया है।

दिन-दिन बढ़ता जा रहा, काले धन का जोर,
डार-डार सरकार है, पात-पात कर चोर।
नहीं सफल होने दें कोई, युक्ति चचा ईमान की
जय बोलो बेईमान की। 41

भारतीय समाज में रिश्वत के बढ़ते हुए रुप पर अशोक अंजुम ने व्यंग्य लिखा है :

रिश्वत में गुण बहुत है यह जिसके पास
बिना परीक्षा दिये ही हो जाता पास।
हो जाता पास, हमारी दिल्ली में,
कभी न जाता क्लास, हमारी दिल्लीमें। 42

2. महँगाई :

आधुनिक युग में महँगाई सुरसा की तरह मुँह फैलाये बढ़ती ही जा रही है।

मनुष्य को अपनी जरुरतों का सामान इकट्ठा करना मुश्किल हो गया है। समाचार पत्रों में वस्तु-मूल्य के सूचकांक बढ़ते ही दिखायी देते हैं। सरकार की आर्थिक नीति की विफलता स्पष्ट है।

आधुनिकयुग में अर्थ की महत्ता दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है। मनुष्य को अपने खाने के लिए शुद्ध खाद्य-पदार्थ मिलना मुश्किल हो गया है। आधिक पैसे कमाने की लालच में व्यक्ति खाद पदार्थ अधिक से अधिक महँगे करके बेचने लगे है। समाज की इन परिस्थितियों पर काका हाथरसाने व्यंग्य किया है -

खट्टे-मीठे-चटपटे अनुभव हुए अनेक,
आई अपने सामने, विकट समस्या एक।
विकट समस्या एक, भयंकर थी महँगाई,
लूट रहे दूकानदार, होटल, हलवाई।
कहँ काका कवि छह आने के पाव टमाटर,
सवा रुपे का सेर, दूध में आधा वाटर। 43

आधुनिक युग में महँगाई दिन पर दिन बढ़ती हीजा रही है। मनुष्य धन कमाने हेतु लाभ-प्राप्ति की लालसा अत्यधिक बढ़ गयी है, परिणामतः वह अवसर पाते ही एक के चार बनाने में लग जाता है। वस्तुओं की कीमतें निरन्तर बढ़ती ही जाती है। इस महँगाई के वातावरण में मनुष्य वस्तुओं की कीमतें अधिक बढ़ाकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं। समाज की इस अत्यवस्था पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

एक दाम के बोर्ड, में सजी हुई दुकान,
मुँह में सोना डालकर, बैठे है श्रीमान।
बैठे हैं श्रीमान, कसम गंगा की खाते,
दस की है जो चीज, बीस की उसे बताते।
मूल्य बढ़ाकर लाभ ले रहे महँगाई का,
झूँठे मुँह पर लगा मुखौटा सचाई का। 44

आर्थिक कमी के कारण समाज में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। आर्थिक कमी के कारण लोग लूट-पाट चोरी करते है। समाज में चारों तरफ भ्रष्टाचार बसें लूटी जाती है. और ये अपराधी आराम से जीवन व्यतीत करते है। और न्याय करने वाले कुछ नहीं कर सकते है। आर्थिक विषमता के कारण बढ़त हुए भ्रष्टाचार पर कवि ने व्यंग्य किया है-

दिन-दिन बढ़ती है उधर, जातिवाद की छूट,
इधर गरीबी ला रहा, महँगाई का भूत।
महँगाई का भूत, लूट होती है दिन में,
रेल और बस लुटे, व्याप्त है भय जन-गण में।
भ्रष्ट मुनाफाखोर, अर्थ पर डालें डाका,
देख रहें हैं टुकुर-टुकुर सत्ता के काका। 45

समाज में आर्थिक कमी के कारण भ्रष्टाचार फैलता जा रहा है। आर्थिक विषमता का प्रभाव सबसे अधिक शीघ्र खराब होनेवाली वस्तुओं पर पड़ता है। इसलिए सब्जियों के भावों में शीघ्रता से परिवर्तन होते रहते हैं। काका हाथरसी ने महँगाई को व्यंग्यात्मकता स्तर पर उजागर किया है -

सब्जी खरीदने बाजार जब जाते हैं,
एक रुपये की एक, मूली सिर्फ पाते हैं।
मूली को पसिकर, चटनी बना लेते हैं,
पत्तों को छीनकर, बच्चे चबा लेते हैं।
दहेज के भय से कुँआरी हैं छोकरी,
चुप रहो आज है छब्बीस जनवरी।
महँगी है चीनी तो काहे को चितलाओ,
नमक डालों चाय में, गटगटट् पी जाओ। 46

आज समाज में महँगाई बढ़ने से मनुष्य का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। मनुष्य को अपना पेट भरने के लिए खाध सामग्री जुटाना मुश्किल हो गया है। साधारण मनुष्य साग-सब्जी मुश्किल से खा पाता है। उसे अपने बच्चों के लिये दूध-दहीं खिलाना मुश्किल हो गया है। महँगाई के बढ़ते विकराल रूप पर काका हाथरसी ने व्यंग्य पंक्तियाँ प्रस्तुत की है -

जन-गण-मन के देवता, अब तो आँख खोल,
महँगाई से हो गया, जीवन डाँवाडोल।
जीवन डाँवाडोल, खबर लो शीघ्र कृपालु,
कलाकंद के भाव बिक रहे बैंगन आलू।
कहँ काका कवि, दूध-दही को तरसें बच्चे,
आठ रूपयें के किलो टमाटर, वह भी कच्चे। 47

भारतीय समाज में बढ़ती हुई महँगाई से आम आदमी को जीना मुश्किल हो गया है। सरकार ने आदमी की राहत के लिए राशन की सरकारी दुकाने खोली परन्तु फिर भी समाज को कोई राहत नहीं मिल रही है। ये दुकानदार सरकारी राशन को अधिक महँगा करके बाजारों में बेंचते है। इस विषय पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

महँगाई ने कर दिए, राशन-कारड फेल,
पंख लगाकर उड़ गए, चीनी-मिट्टी तेल।
'क्यूँ' में धक्का मार किवाड़ बंद हुई। 49

आज समाज में चारों तरफ जहाँ देखो वहाँ पर महँगाई के बादल छाये हुए है इस महँगाई के युग में समाज में चारों तरफ बेकारी और भुखमारी, छायी हुई है। समाज की इन विकृतियों को देखकर कवि ने व्यंग्य किया है -

बेकारी और, भुखमरी, महँगाई घनघोर,
घिसे-पिटे ये शब्द है, बंद कीजिए शोर।
अभी जरुरत है जनता के त्याग और बरिदान की,
जय बोलो बेईमान की।

आधुनिक युग में दिन पर दिन महँगाई बढ़ती जा रही है। इस महँगाई को देखकर कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है पुराने समय में लोग जेब में पैसा लेकर जाते थ और थैला भरकर सामना लाते थे। परन्तु अजा के युग में उल्टा हो गया है थैला भरकर पैसा ले जाने पर पाँकिट में सौदा आता है। इस महँगाई के परिवर्तन पर कवि ने व्यंग्य किया है-

पाँकिट में पीड़ा भरी, कौन सुने फरियाद?
यह महँगाई देखकर, वे दिन आते याद।
वे दिन आते याद, जेब में पैसे रखकर,
सौदा लाते थे बाजार से थैला भरकर।
धक्का मारा युग ने मुद्रा की क्रेडिट में,
थैले में रूपए हैं, सौदा है पाकिट में। 50

समाज में महँगाई की वजह से अनेक विकृतियों का समावेश हो गया है। महँगाई आसमान छू रही है। लोगों को अफना जीवन व्यतीत करना मुश्किल हो गया है। इस बढ़ती हुई महँगाई के संदर्भ में काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है-

'एस. एल. बी. तीन की देखी सफल उड़ान,
घूम रहा है 'रोहिणी' झूम रहा विज्ञान।
झूम रहा विज्ञान, तीर क्या मारा हमने,
बिन राकिट के, चमत्कार दिखलाया तुमने।
कहँ काका कवि, लगा नहीं कुछ पैसा-पाई,
आसमान में चक्कर काट रही महँगाई। 51

आधुनिक युग में महँगाई दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। आज के शासक दल अपनी सरकार बनायें रखने के लिये पहले खाध पदार्थो को सस्ता कर देते है और शासन में आने के बाद उनके दाम आसमान छूते है। आदमी के देखते ही देखते महँगाई में तीन गुना का अन्तर आ जाता है। बढ़ती हुई महँगाई पर काका हाथरसी का व्यंग्य इस प्रकार है।

इंदिरा जी के राज में, काकी जी झुँझलात,
पहले ढ़ाई-तीन थी, अभ चीनी है सात।
फीकी चाय पिएँ गुलफाम। रघुपति राघव....। 52

परिवर्तन शास्वत है बढ़ते हुए समय के साथ समाज में दिन पर दिन अनेक परिवर्तन देखने को मिलते है। समाज में आर्थिक स्थिति में भी परिवर्तन होते जा रहे है। महँगाई ने एक विकराल रूप धारण कर लिया है। गरीब आदमी को खाध पदार्थो को खरीदना मुश्किल हो गया है और इस बढ़ती हुई महँगाई का कोई अन्त नहीं हो पा रहा है। इस सबंध में कवि सुबोध गौर का व्यंग्य द्रष्टव्य है -

अगर महँगाई इसी तरह
अमरबेल की तरह बढ़ती रही
गरीबों के सर चढ़ती रही
तो एक दिन देखना
जब मिलावट खोर, रिश्वतखोर
और जमाखोर के साथ
आदमखोर आएगा
जो नाश्ते में बचा
और भोजन में आदमी को खाएगा। 53

आधुनिक युग में दिन पर दिन महँगाई एक चरमसीमा पर बढ़ती जा रही है।

आज की युवा पीढ़ी को अपना जीवन निर्वाह करना मुश्किल हो गया है। दिन पर दिन महँगाई बढ़ती ही जा रही है। महँगाई कम होने की तो इंसान उम्म्मीद ही छोड़ बैठा है। व्यक्ति के आने वाले दिनों में क्या होगा, इस पर कवि ने व्यंग्य की अभिव्यक्ति की है -

दाने गिनकर दाल मिलेगी,
गेहूँ की बस छाल मिलेगी।
पानी के इंजेक्शन होंगे,
हलवाई हैरान मिलेंगे।
जलने वाला खेल मिलेगा,
बस मिट्टी का तेल मिलेगा।
शीशी में पेट्रोल मिलेगा।
आने वाली पीढ़ी को।
ढोल के भीतर पोल मिलेगा। 54

समाज में बढ़ती हुई आर्थिक विषमता मनुष्य के लिए घातक है। जिसमें गरीब मनुष्य को जीवन निर्वाह करना मुश्किल हो गया है। इस बढ़ती हुई महँगाई पर मनुष्य वैचारिक स्तर पर सोचने के लिए विवश हो जाता है। परन्तु इस महँगाई के बढ़ने से सरकार को कोई फर्क नहीं पड़ता है। सरकार घोटालें और भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रही है। इस संदर्भ में कवि हुल्लड़ मुरादाबादी ने व्यंग्य लिखा है -

गेहूँ चीनी सब महँगे हैं, यह बतलाऊँ खायें क्या?
मिट्टी वाला तेल बचा है, इसको ही पी जाये क्या।
गवर-मैंट को क्या चिन्ता है मुझ पर उधारों की,
हर प्राणी जैसे मच्छर से, इंजेक्शन लगवाता है,
उसी तरहंसे बजट, हमारा खून चूसने आता है,
मारुती को नहीं फिकर है पंचर हुए खंटारों की।
घोटालों का देश हमारा मंड़ी, भ्रष्टाचारों की,
आओ मिलकर हवा निकालें, सरकारी गुब्बारों की। 55

भारत में स्वतंत्रता के बाद समाज में अनेक समस्याओं सुरसा की भाँति मुँह फैलाए बढ़ती जा रही है। जिसमें महँगाई की बढ़ती समस्या से लोगों को मुक्ति पाना मुश्किल हो गया है। व्यक्ति को स्वतंत्रता से जीना मुश्किल हो गया है। लोकतंत्र सिर्फ

कहने मात्र के लिये रह गया है। इस पर कवि अनिल 'धमाका' ने व्यंग्य किया है -

आज की स्वतंत्रता को आंकता हूँ और
देखता हूँ-
सुरसा बनी समस्यायें जो,
पूरे देश को खा रही है,
हर नागरिक को मुँह दिखा रही हैं,
पांवो में पड़ी महँगाई की बेड़ियाँ।
हाथों में अन्याय की हथकड़िया।
भ्रष्टाचार व जी-हजूरी,
लोकतंत्र लम्बे समय से बीमार
राष्ट्रीय एकता को आया हुआ बुखार
चारों ओर साम्प्रदायिकता का जहर,
और आगे चिन्तन नहीं कर सकता हूँ।
सचमुच मेरे देश में स्वतंत्रता-दिवस
दशकों से नहीं आया,
मेरे जीवन में स्वतंत्रता-दिवस
आज तक भी नहीं आया। 56

भारतीय समाज में खाद्य-पदार्थ इतने मँहगे होते जा रहे है। कि इनके भाव सुनकर गरीब आदमी तो खाने की सोच ही नहीं सकता है। आज की महँगाई कम होने का नाम तो लेना दूर दिन-दूनी बढ़ती ही जा रही है। गरीब व्यक्तिको कठिनाइयों से सामना करना पड़ता है इस विषय परकवि अशोक शर्मा का व्यंग्य द्रष्टव्य है -

यह अपने आप ही मौत से जूझ लिया था
राह चलते-चलते
टमाटर का भाव पूछ लिया था
ऐसा जाड़ा चढ़ा
कि अभी तक कांप रहा है
भागकर आया था इसलिए हाँप रहा है।
और इसने सब्जी मण्डी में आकर
अपनी जान को आफत लगाई है

सब्जियों के भाव से ज्यादा
अब इसका 'ब्लड प्रेशर' हाई है।
अंत में डॉकटर बोला-
'पता नहीं, इस दुनिया में
कैसे-कैसे लोग हैं
कि जरा-सी महंगाई तक नहीं झेल पाते हैं
और मरने के लिए यहाँ चले जाते हैं।
अगर इनका
सब्जीमंडी में आना इतना ही जरुरी है
तो सब्जी मंडी के बीच
डॉकटर की दुकान खोलना
हमारी लाचारी है,
हमारी मजबूरी है।' 57

आज भारत की जनता को अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़ रहा है। समाज में आतंकवाद पूर्ण रूप से फैल गया है। महँगाई तो इस तरह आसमान छू रही है। कि गरीब इन्सान कौ रोटी-दाल खाना मुश्किल पड़ रहा है। आर्थिक कमी के कारण आज के त्यौहार सूने हो गये है- आधुनिक युग के गिरते हुए मूल्यों को देखकर कवि जैमिनी हरियाणवी ने व्यंग्य किया है-

फैला है आतंक देश में, व्यर्थ घरों की रखवाली है
यह भी कोई दीवाली है?
आटा-दाल बड़ी कठिनाई, अब पकवान कहाँ से आये
कैंसे बच्चों की फुलझड़ियाँ, पत्नी को साड़ी दिलवायें
रुठी अपनी घरवाली है, यह भी कोई दीवाली है? 58

आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति को दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं को जुटाना मुश्किल हो गया है। बढ़ती हुई महँगाई के कारण व्यक्ति को दो जून की रोटी जुटाना मुश्किल हो गयाहै। गरीब व्यक्ति को दूध, दही, मक्खन, घी आदि वस्तुओं को खरीदना मुश्किल हो गया है। गरीब व्यक्ति महँगाई कम होने की उम्मीद लगाये बैठा है। परन्तु महँगाई दिनो दिन बढ़ती जा रही है। इस संदर्भ में अशोक अंजुम ने व्यंग्य किया है-

ऊधौ, महँगाई ने मारें,

दोऊ जून नहिं रोटी परे खोज में कारे।
पहले हम थे लाल टिमाटर, अब भए सूखि छुआरे।
दूध-दही के सपने आवें, जी पै चलत कटारे,
घी सूँघन को मिलि नहि पावै, ऐसे हाल हमारे॥
महँगाई छूमंतर होगी, निस-दिन सुनते नारे।
लेकिन रस्ता देखि-देखि हम बैठि देहरी हारे॥ 59

भारत देश में महँगाई प्रबल रूप से पूरे देश में फैलती जा रही है। इस महँगाई में गरीब इन्सान को अपना जीवन निर्वाह करना मुश्किल हो गया है। समाज में बदलते हुए परिवेश को देखकर कवि बालकृष्ण गर्ग ने व्यंग्य किया है -

घोर मँहगाई के पर्वत तले
सर छुपाए जा रहे हैं, क्या करें?
है निरा पतझड़, बहारों के मगर
गति गाए जा रहे हैं, क्या करें? 60

आज बढ़ती हुई महँगाई से हर गरीब व्यक्ति परेशान हो गया है। परन्तु आज के शासकों को इनसे कोई सरोकार नहीं है। वे सिर्फ अपने स्वार्थ हेतु कार्य करते हैं। गरीब जनता को अपनी जरुरतों को पूरा करने के लिये अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सरकार मन्दिर और मस्जिद के मुद्दे में उलझी रहती है। समाज की इन परिस्थितियों पर डॉ. महरउद्दीन खां ने व्यंग्य लिखा है -

महँगाई का रोना मत, रो राम नाम का जापकरें,
अब केवल मंदिर मस्जिद की बातें निस-दिन आप करें।
दस रूपए में अगर किलो मिलता है, बैगन मिला करें,
घी और तेल हो गया महँगा, इसका नहीं विलाम करें।
कद्दू जैसी चीज आज, दिखती है दुर्लभ दिखने दो,
मंदिर-मस्जिद चाट-चाट कर खत्म भूख का ताप करें।
पेट्रोल डीजल महँगा है, होने दें, क्या पीना है,
चलो कार सेवा में चलकर, दूर सभी संताप करें। 61

आधुनिक युग में महँगाई आसमान छू रही है। महँगाई से त्रस्त जनता को खाना-पीना पहनना मुश्किल हो जाता है। इस बढ़ती हुई महँगाई में एक गरीब व्यक्ति अपनी इच्छाओं को मारकर अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। संदर्भ में कवि फटीचर

ने व्यंग्य की अभिव्यक्ति की है -

महँगाई को देख, न करिए दिल छोटा,
बातें करिए नोट, नहीं हो सकता टोटा।
एक बात कहता हूँ, जो है सचमुच सच्ची,
ईधन की है कमी खाइए, सब्जी कच्ची।
जूते-चप्पल त्याग सदा, ही पैदलचलिए,
केशों पर अब तेल नहीं केवल जल मलिए।
सारे कपरों का साइज अभ रखिए छोटा,
सूट-पैंट की जगह पहनिए, लाल अँगोछा।
मत करिए असनान नित्य करता हूँ चर्चा,
नहीं घिसेगी देह, बचेगा साबुन-खर्चा। 62

वर्तमान में इस आपाधापी जीवन में महँगाई चरम सीमा पर पहुँच गयी है। नौकरी मिलने के बाद एक तनख्वाह में व्यक्ति को घर चलाना मुश्किल है। महँगाई के विकराल रूप पर डॉ. आनंद अग्रवाल ने व्यंग्य किया है।

महंगाई के दौर में, जिसमें न हो सके निर्वाह
वह कैसी तनख्वाह वो तो तन जाती है तनखा
जो तन को खाती है और मन को जलाती है। 63

भारत में महँगाई की समस्या बढ़ती ही जा रही है। आम आदमी को अपना घर चलाना मुश्किल है। एक तनख्वाह मिलने से पहले उसके सामने हजारों खर्चे आ जाते है। और वह रो-रो कर जिन्दगी व्यतीत करता है। समाज की इस आर्थिक समस्या पर अशोक चक्रधर ने व्यंग्य पंक्तियां दृष्टव्य की है -

रूपए मिले, कुछ घंटे छूने को
आज पहली तारीख है।
उनके भी हिल्ले लग जाने का दुख
रात कच्ची पीने के, सुख के बराबर है।
और कलतक तो इतना बड़ा संत हो लेगा कि
स्पिनिंग मास्तर प्रति घंटा

पचीस गाली भी देगा तो सुन लेगा।
उतनी सी रुपतिलयों को
उतने से ज्यादा बार गिन-चुकाना
मेहनत के सत को उँगलियो पर महसूस करना।
मिल की तनख्वाह खिड़की, और बाबू की झिड़की से लेकर
घटवारें की झुग्गा और आँखों की लग्गी तक
दुकाने है जो पहली तारीख को जानती हैं।
हर दुकान पर उँगलियों के जरिए
उसका सत सरकता है और उस वाली आखिरी दुकान के
फट्टे पर कुल्हड़ पी बहकता है।
दमियल माँ की अँग्रेजी दवाई और आटा-दाल-गुड़की
महँगााई, जब बराबर की तनख्वाह खा सकती है
तो वह क्या करें
कि मुनिया स्लेट को रोती रह जाती है हर बार
चंपा की धोती रह जाती है हर बार
आफतों की काँटा-बेल झुग्गी पर और छा जाती है। 64

कवि अल्हड़ बीकानेरी ने महँगाई की बढ़ती हुई दशा पर व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है। आज के युग में हर रोज नई सरकार बनती है और नया बजट प्रस्तुत किया जाता है। और बजट में महँगाई कम होने के बजाय बढ़ती ही जा रही है।

तुझको नज़ला हमें जुकाम, सीताराम, राधेश्याम
भज मन, बमभोले का नाम, सीतिराम, राधेश्याम
जय मेरी सरकार, कहाँ तक
तेरी करें बड़ाई
जब-जब आया नया बजट तब
और बढ़ी महँगाई
तेरी लीला ललित-ललाम, सीताराम, राधेश्याम
भज, मन बमभोले का नाम, सीताराम, राधेश्याम
बूढ़ें विश्वामित्रों की हो

सफल तपस्या कैसे
चपल मेनका-सी महँगाई
फिरे कुदरती ऐसे । 65

आज समाज में आर्थिक विषमतायें इतनी बढ़ती जा रही है। कि गरीब आदमी के जीवन में अकाल पड़ गया है। दिन पर दिन बढ़ती हुई महँगाई से लोगों को जीवन निर्वाह करना मुश्किल हो गया है। चारों तरफ भ्रष्टाचार की अधिकता बढ़ती जा रही है। इस विषय पर कवि भवानी शंकर गौड़ ने व्यंग्य किया है-

घर में बीमार चार, महँगी दवा विचार,
कपड़ें है तार-तार, रोटी के लाले हैं।
बुरा पड़ा है अकाल, महँगाई खीचे खाल,
जीने का खड़ा सवाल, दिन निष प्याले है।
खीचातानी मच रही, आबरुएँ नुच रही,
खुली आँख मिच रही, सुरक्षा पै ताले हैं।
आदमी बना शैतान, ले सुपारी लेता जान,
भज प्यारे भगवान, वे ही रखवाले हैं। 66

आज समाज में अर्थ की महत्ता को सर्वोपरि मानते है। परन्तु महँगाई दिन-दुनी, रात-चौगुनी बढ़ती ही जदा रही है। कवि सुरजीत 'नवदीप' ने बढ़ती हुई महँगाई पर व्यंग्य किया है कि चन्द्रमा शुक्र पक्ष में बढ़ता है, परन्तु महँगाई तो रोज ही बढ़ती जा रही है। महँगाई में गरीब आदमी को अपने बच्चों को पालना मुश्किल है।

महँगाई भी इक गजब की बला है,
जिसने इसे छुआ, जला ही जलाहै,
इससे दोस्ती अच्छी न दुश्मनी अछ्छी,
जिसने इसे चाहा उसे ही छला है।
शुक्र पक्ष में बढ़ता चन्द्रमा लेकिन,
इसे आती रोज बढ़ने की कला है।
बड़े घर की बहू, काम में चलती,
दूर से नमस्कार, उसमें ही भला है।
त्यौहार भयभीत दूर से गुजरने,
भूखा-पुत्र इसकी गोद में पला है। 67

भारतीय समाज में महँगाई इतनी चरम-सीमा पर पहुँच गयी है। कि गरीब इन्सान को अपना जीवन बड़ी निराशा के साथ गुजारना पड़ रहा है। महँगाई गरीब आदमी के लिए अभिशाप बनकर फैलती जा रही है। इन परिस्थितियों को देखकर कवि जयकुमार रुसवा ने व्यंग्य लिखा है -

मजदूरों की बस्ती
यहाँ जब
शौशव की
नन्हीं कलाइयाँ
रोटी के लिए
कटोरी बढ़ाती है
तो विवश ममता
उसे कहानियाँ
सुना-सुनाकर
फुसलाती है। 68

समाज में बढ़ती हुई महँगाई से अनेक विकृतियों का समावेश हो गया है। आदमी में स्वार्थ की प्रवृत्ति उत्पन्न हो गयी है। हर व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिये कुछ भी कार्य करने की सोचने लगता है। जो व्यक्ति अधिक पैसा कमा चुके है। वे गरीब इनसान को कुछ नहीं समझते है। भारतीय समाज पूरा अस्त-व्यस्त हो चुका है। समाज में बढ़ती हुई महँगाई से लोगों को अनेक दुष्परिणाम झेलनें पड़ रहे है। इस विषय पर शैल चतुर्वेदी ने समाज की विकटता को व्यंग्य द्वारा संकेतिक किया है -

देश की धरती सोना उगले
उगले हीरे मोती
सब जगह भरी है
सबै भूमि गोपाल की है
इस कहावत को भुना रहे हैं
स्वतंत्र भारत के नागरिक है
आजादी मना रहे है।
जनता की धरती जनता के लिए
यही है ड्रोमोक्रेसी

रोकनें वाले की ऐसी-तैसी
सामने से हट जा
वरना आ जा तू भी बैठ जा
तू भी हिन्दुस्तानी
मैं भी हिन्दुस्तानी
फिरकाहे की शर्म
पानी ला पानी
जल्दी कर राजा-रानी
महँगाई का ये आलम है
कि हर सजनी तंग
और दंग बालक है
चीजों के भाव आसमान पर जा रहे हैं
धरती छोटी पड़ रही है
आदमी को ऊपर उठा रहे हैं
जो ऊपर जा रहा है
वो नीचे वाले को
अगूँटा दिखा रहा है
कि ले बेटा चूस ले
नहीं तो हमारी तरह तू भी घूस ले। 69

समाज में अनेक विकृतियों का समावेश भ्रष्टाचार तीव्र गति से बढ़ रहा है। इसका कारण महँगाई, इस बढ़ती हुई महँगाई से त्रस्त होकर लोगों ने अपना-ईमान धर्म छोड़ दिया है। व्यक्ति झूट, फरेब, बेईमानी को अपना सिद्धान्त समझकर खूब धन कमाने की सोचते है समाज की इस वास्तविकता पर कवि शैल चतुर्वेदी का व्यंग्य द्रष्टव्य है -

ईमान जी को खोजते-खोजते
जब हम उनके आश्रम पहुँचे
तो आश्रम की जगह
कोठी नज़र आई
कॉल बँक दबाते ही

भीतर कोई चीखा-'आई'
तभी किसी ने दरवाजा खोला
और एक नारी कंठ बोला-
'किससे काम है भाई?'
हमने पूछा - 'ईमान जी है।'
वो बोली - 'उनको गुजरे हुए तो
ज़माना बीत गया
आजकल यहाँ बेईमानजी रहते हैं
मैं उनकी रखैल हूँ
मुझे महँगाई कहते है।'
अरे, अभी तक बाहर खड़े हैं आप
भीतर आइए
खाइए, पीजिए, मौज उड़ाइए
यहाँ सब इंतजाम है
बेईमान की कोठी में
आराम ही आराम है। 70

3. बेरोजगारी :-

आज समाज में अनेक विकृतियों, विद्रूपताओं, भ्रष्टाचार की अधिकता बढ़ती जा रही है। आज आर्थिक विषमता विकराल रूप लेती जा रही है। जिसमें बेरोजगारी की समस्या अत्यन्त जटिल है। आज की युवा पीढ़ी आर्थिक संकटों से पीड़ित तो है ही साथ ही बेरोजगारी की समस्या ने निरस्त कर दिया है। आज की युवा पीढ़ी दर-दर की ठोकरे खाती फिर रही है। इन विपरीत परिस्थितियों के कारण युवा पीढ़ी को गलत रास्ते पर जाने की सम्भावन बढ़ रही हैं। इस वास्तविकता पर कवि शैल चतुर्वेदी ने व्यंग्य किया है।

होली के दिन
एक बाबा जी बोले
'तेरी रक्षा करेगा भोले
त्योहार के दिन हमारे दर्शन कर रहा है
तुझे आर्शीवाद देने का मन कर रहा है।'

हमने कहा -
'बाबा जी।
अपने मन को रोकिये
आर्शीवाद दाताओं के चरण छूते-छूते
कमर झुक गई हैं
और जीवन की गाड़ी
आगे बढ़ने से रुक गई है।'
बाबा बोले :
'चिन्ता मत कर
हम तेरी गाड़ी को धक्का लगायेंगे
और तुझे मंजिल तक पुहँचायेंगे।
तू तो बस जेब में हाथ डाल
और ज्यादा नहीं सौ का नोट निकाल
भाँग छानेंगे दम लगायेंगे
और तेरे नाम का डमरू बजायेंगे।'
हमने कहा -
'बाबा जी ! बेकारी ने हमारा डमरु
इस तरह बजाया है
कि एक जेब में आंसू
दूसरी मे बाप की गाली है
और ऊपर की जेब खाली है
सरकार काम नहीं देती
बाप पैसा नहीं देता।' 71

समाज में आर्थिक विषमता के कारण युवा पीढ़ी त्रस्त हो चुकी है। युवा पीढ़ी को नौकरी के लिये दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती है। फिर भी बेकार घूम रहे है। आज इस बेरोजगारी की समस्या पर कवि घनश्याम अग्रवाल व्यंग्य द्वारा यर्थाथ प्रस्तुत किया है -

आती हुई कार से
एक नौजवान टकरा गया।

टाँग टूटी,
फिर भी मुस्कुराते देख
कारवाला चकरा गया।
नौजवान धीरेसे बोला-
'प्लीज'
मुझे हास्पिटल मत ले चलिए
टाँग टूटने से,
मेरी तकदीर खुल सकती है
साल-साल से बेकार हूँ
नौकरी नहीं अब कम से कम
भीख तो मिल सकती है।' 72

भारतीय समाज में बदलते हुए परिवर्तनों को देखते हुए काका हाथरसी ने एक सजग एवं सशक्त व्यंग्यकार के रूप में समाज के वर्तमान स्वरूप को समझा, परखा है। आज का सामाजिक जीवन आर्थिक विषमता के कारण अस्त-व्यस्त हो गया है। आज की युवा पीढ़ी इसी में परेशान रहती है कि किस तरह पैसा कमाया जाये।

पैसे से पैसा बने, यह प्रसिद्ध सिद्धांत,
सभी जानते मानते, समझदार, संभ्रात।
समझदार-संभ्रात, याद आया इक हमको,
नोट करो बतलाते है, वह नुस्खा तुमको।
नमक मिर्च अमचूर, एक रूपए की लाओ,
घोट-पीसकर चूरन की गोलियाँ बनाओ।
चिल्ला-चिल्लाकर बेचें लड़कों की टोली,
ले लो भइए एक रूपे की बारह गोली।
लागत से दस गुने मिले, यह धंधा ऐसा,
सिद्ध हो गया बनता है, पैसे से पैसा। 73

समाज में आर्थिक विषमतायें बढ़ती जा रही है। जिसमें बेरोजगारी की समस्या सबसे विकराल रूप धारण कर चुकी है। आज की युवा पीढ़ी नौकरी पाने के लिये कितने प्रयत्न करते है। लेकिन उन्हें निराशा मिलती है, जो व्यक्ति अधिक रिश्वत देते

है। जिसकी मंत्री तक पहुँच है। वो अपनी युक्ति अपनाते है। आज की युवा पीढ़ी को पढ़ने के बाद निराशा ही मिलती है तब वह गलत रास्ते पर चलने के लिये मजबूर हो जाता है। इस बेरोजगारी की समस्या पर कवि अशोक अंजुम ने व्यंग्य किया है -

ऊधौ, नौकरियां दिलवाओ !
कोई कहता-नोट निकालो, सौदा अभी पटाओ।
कोई कहता मंत्रीजी की, चिट्ठी हो तो दिखाओ।
तुम मंत्री केयार धने हों, कुछ तो जुगत भिड़ाओ॥
मिली डिगरियाँ रखकर चांटू, भैय्याजी बतलाओ।
मां-बाप की आशाओं पर गाज न अभ गिराओ॥
खाड़कुओं के डैडी बोले -मेरे गुट में आयो।
कत्ल करो, बंदूक चलाओ, पैसा खूब कमाओ।
खाली हाथ पड़ा हूँ घर पै, टैम न तनिक गंवाओ।
ऐसे में कहीं फिसल न जाऊँ, जल्दी राह दिखाओ॥ 74

वर्तमान में भारतीय समाज में आर्थिक संकट बढ़ता ही जा रहा है। युवा पीढ़ी को नौकरी के लिये दर -दर की ठोकरें खानी पड़ती है। गरीब मनुष्य समस्याओं से जीवन की आशायें खो बैठते है। बढ़ती हुई महँगाई और बेरोजगारी की समस्या का निर्वाह करने में सरकार कोई कदम नहीं उठा रहीं है। हमारे देश में लाखों बेरोजगार घूम रहे है और भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है -

समाज की इन विपरीत परिस्थितियों पर अशोक चक्रधर ने व्यंग्य है -

मैं सोचता हूँ, इन्हीं हाथों से उसने बचपन में
तिमाही, छपाही, सालाना परीक्षाएँ दी होंगी,
मां से पास होने की दुआएँ ली होंगी,
इन्हीं हाथों में वह, प्रथम श्रेणी में पास होने की
खबर लाया होगा, इन्ही हाथों से उसने
खुशी का लड्डु खाया होगा,
इन्हीं हाथों में डिग्रियाँ सहेजी होंगी,
इन्हीं हाथों से उसने अर्जियां भेजी होंगी,
और अगर काम पा जाता, तो ये निपूता,
दुलहिन का मुखड़ा उठाता,

इन्हीं हाथों से झुनझुना बजा कर बेटी को बहलाता,
रोते हुए बेटे के गाल-सहलाता।
तूने तो काट लिए मेरे दोस्त।
लेकिन तू, कायर नहीं है।
कायर तोतब होता
जब समूचा कट जाता, और देश के रास्ते से
हमेशा-हमेशा को हट जाता।
सरदार भगतसिंह ने
ये बताने के लिए कि देश में गुलामी है
पर्चे बांटे,
और तूने, बेरोजगारी है, येबताने के लिए हाथ काटे।
मै कोई बड़ी बात कह रहा हूं
ऐसा तो मुझे भ्रम नहीं है,
लेक़िन प्यारे तू किसी शहीद से कम नहीं हैं।
तू किसी शहीद से कम नहीं है।
कि तेरी शहादत के पीछे
लाखों बेरोजगार नौजवानों की कत्तार है,
और उस पूरी कतार की
यही पुकार है कि हमारे भूखे-नंगे परिवारों को
रोजी-रोटी का इंतजाम दो,
हमें काम दो,
हमें काम दो,
हमें काम दो। 75

भारतीय समाज में आर्थिक संकट ज्यों-त्यों बढ़ रहा है। बेरोजगारीकी समस्या भी बढ़ती जा रही है। आज की युवा पीढ़ी दर-दर की ठोकरे खाते फिरते है। इन विपरीत परिस्थितियों पर डॉ. गोपाल बाबू शर्मा ने व्यंग्य लिखा है -

सुना है इस बार से
विश्वविद्यालय ने यह विचार किया है,
क्योंकि छात्र पास होकर

बेरोजगारी की चक्की में पिसेंगे,
व्यर्थ की भाग-दौड़ में
उनके जूते घिसेंगे,
इसलिए उन पर
रहम किया जाय थोड़ा।
'गीता' के बजाय
उनको 'ड्रिग्री' के साथ
'नकवोकेशन' पर
दे दिया जा.
जूतों का एक-एक जोड़ा।' 76

4. घोटाले :-

समाज में आर्थिक कमी होने का कारण अनेक विकृतियों, विद्रूपताओं का समावेश हो गया है। समाज में कही भी ईमानदारी का नामों, निशान नहीं है। अधिक पैसे की लालसा में ठेकेदार ठेका लेकर मकान, पुल, सड़क आदि बनवाते है और आधा पैसा अपनी जेब में रखते है। आर्थिक विषमता के कारण बढ़ते हुए घोटालों परकवि प्रेम किशोर पटाखा ने व्यंग्य द्वारा कटाक्ष किया है -

रेत की दीवार
नीचे आ गई
एक साथ सभी को दबा गई
फिर भी सभी बच गए
कारण
दीवार बनाने के लिए
अपनाए गए फार्मूले नए
ला लोहा, ना सीमेंट
एक्स्पैरीमेंट, एक्सीलेंट
चेहरा खिल गया
फिर से नई दीवार बनीने का ठेका
उसी ठेकेदार को मिल गया। 77

भारतीय समाज में समय परिवर्तन के साथ अनेक विकृतियों का समावेश हो

गया है। आर्थिक विषता भी अत्याधिक बढ़ गयी है। लोग अधिक धन कमाने की लालसा में सरकारी पैसो का घोटाला करते हैं। देश के शासक नेता से लेकर अफसर, कर्मचारी सरकारी पैसे को पचा जात है। और गरीब जनता को अपनी समस्याओं से जूझना पड़ता है। इन बढ़ते हुए घोटालों के कारण आर्थिक स्थिति बिगड़ती जा रही है। इस वास्तविकता को देखकर कवि बरसाने लाल चतुर्वेदी ने व्यंग्य किया है -

गरीबी हटाइवे कूँ रचावे है 'सेमिनार'
होटलन में बैठि-बैठि 'डिनर' उड़ावे है।
तोदंवारे, अफसर और लपका राजनीति के,
'हताओ गरीबी' सब एक स्वर सब गावे हैं।
कौन से छिपो है बताओ ये कटु सत्य,
लाखन नर-नारी यहाँ एकटेम खावे हैं,
सब मिलि दूरबीन लेके लगे हैं, ये,
गरीबी को रेखा तोऊ नाइ पावे हैं।
ग्राम-विकास की योजना में,
कड़ोन रूपयान की राशि लगायी।
कागज ये खुद-नहरें गयीं,
कुआँ हू खुदे फिर गये हैं भराई।
बाँटे चना ग्रामीणन कूँ,
लपकान ने जमके खायी मलाई,
ग्राम-प्रधान शहिर अफसर,
नेटान ने अपनी गरीबी मिटायी। 78

आज के आधुनिक युग में आर्थिक संकट की समस्यायें बढ़ती है जा रही है। आज पैसा कमाने के लिए व्यक्ति अपना धर्म ईमान नहीं देखते है। और न ही देश, समाज के हित के लिए सोच पाते है। हर क्षेत्रमें घोटालें होने में लगे है। इन घोटालों से गरीब जनता को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है-

इस संदर्भ में बरसाने लाल चतुर्वेदी ने व्यंग्य प्रस्तुत किया है -

एक ही बरस में पलस्तर उखरि कै गिरो,
फर्श हू धस को विधिना। हाय ये कहा भयो?
वर्षा में छत्तन ते पानी की धारा बहै,

घर में 'स्विमिंग पूल' बिना पैसा बनि गयो।
विज्ञापन देखि जमा-पूँजी, फँसाइ बैठयो,
काका काकी से कहे-शांता आ शूं थयो,
अपनी तिजोरिन में लाखन जमा कियो। 79

आज व्यक्ति को पैसे की इतनी लालसा बढ़ गयी है। कि व्यक्ति ठेका लेकर काम करते है और उनके निर्माण कार्य पर तुरन्त दुर्घटना हो जाती है। जिसमें कितने भी मनुष्य की जानें जाये इससे उन्हें कोई परवाह नहीं है। आज की बढ़ती हुई आर्थिक लालसा और घोटालो पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

चैक केश कर बैंक से,
लाया ठेकेदार,
आज बनाया पुल नया कल पड़ गई दरार। 80

4- मिलावट :- आधुनिक युग में महँगाई चरम सीमा पर है। महँगाई में धन प्राप्ति हेतु व्यक्ति तरह-तरह के हथकण्डों का प्रयोग करता है। आज खाध-पदार्थो की कोई भी वस्तु शुद्ध रूप में मिलना मुश्किल है। आधुनिक युग के व्यापारियों पर उनके कारनामों पर पं. गोपाल प्रसाद व्यास का व्यंग्य द्रष्टव्य है -

हफ्तों तक उनकी जीजी से,
बातों में मेल नहीं होगा,
चेहरे पर चमक नहीं होगी,
बालों में तेल नहीं होगा।
दालों में कंकर निकलेंगे,
सब्जी में होगा नमक तेज
धरनी की कृपा बिना घर में,
रहना कुछ खेल नहीं होगा। 81

आज समाज में अर्थ की विषमताओं के कारण अनेक घोटाले होते है। खाद-पदार्थो में मिलावट की सीमा पार हो गई है। लोगों को शुद्ध-खाध-पदार्थ मिलना मुश्किल है। ज्यों-ज्यों महँगाई बढ़ती जा रही है। मिलावट की अधिकता भी बढ़ती जा रही है। इस विषय पर अदित्य शर्मा चेतना की व्यंग्य पंक्तियाँ इस प्रकार है-

एक दूध वाले से पूछा क्यों भाई ?
इस कदर बढ़ गई महँगाई,

लेकिन तुमने, दूध की-
कीमत नहीं बढ़ाई?
उसी पुराने भाव पर बेंच रहे हो।
लाभ की जगह
हानि खेंच रहे हो?
वह बोला-
मालिक ! मुझें क्या फर्क पड़ता है।
खूब बढ़े महँगाई।
मैने तो घाटा पूर्ति हेतु
दूध में पानी की मात्रा बढ़ाई।
हाँ केवल पकड़ने वाले को,
मुफ्त में शुद्ध दे रहा हूँ।
श्रीमानजी उसका भी मुनाफा
आप ही से ले रहा हूँ। 82

आज समाज में महँगाई दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। मनुष्य अपनी आर्थिक कमी को पूरा करने के लिये खाध पदार्थो में मिलावट करने लगा है। यह मिलावट गाँव की अपेक्षा शहरों में अधिक होती है। मनुष्य का जीवन पहले की तरह नहीं रहा है। उसके जीवन में दिन पर दिन बदलाव आता जा रहा है। इस संदर्भ में काका हाथरसी ने व्यंग्य लिखा है -

हलवाई कहने लगा, फेर मूँछ पर हाथ,
दूध और जल का रहा, आदिकाल से साथ।
आदिकाल से साथ, कौन इससे बच सकता?
सूरी में खालिस दूध नहीं पच सकता
सुन काका हम आधा पानी नहीं मिलाएँ,
पेट फूल दस बीस यात्री नित मर जाएँ। 83

भारतीय समाज में मिलावट दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। लोग सिर्फ यह देखते है कि उन्हें मिलावट करने से कितना फायदा होगा उन्हें नुकसान से कोई लेना-देना नहीं है। मिलावट कविता में कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

मेल-मिलावट के लिए, व्यर्थ मचा रहे शोर,

व्यर्थ मचा रहे शोर, जानते सब विज्ञानी।
हाइड्रोजन-ऑक्सीजन मिल, बनता पानी,
कहँ 'काका' कविराय, शहद में गुड़ का शीरा,
पहुँचता है लाभ, गोंद में मिला कतीरा। 84

आधुनिक युग में मिलावट को सर्वोपरि स्थान दिया जाने लगा है। काका कवि कहते है कि जब सृष्टि का निर्माता ईश्वर भी पृथ्वी, जल, वायु, आकाश और अग्नि की मिलावट से सृष्टि का निर्माण करता है तो मनुष्य क्यों न मिलावट करे, मिलावट करने वालों के इस कुर्तक पर काका हाथरसी ने व्यंग्य द्रष्टव्य किया है -

वेद-शास्त्र सबने यही तथ्य किया स्वीकार,
मिलकर माया-ब्रह्मा यह, सृष्टि हुई तैयार।
सृष्टि हुई तैयार, विधाता सृष्टाचारी
शब्द बिगड़कर यही हो गया भ्रष्टाचारी
कहँ 'काका' कर रहे, मिलावट की क्यों निंदा
चलने दो व्यापार, भजो राधे गोविंदा। 85

काका हाथरसी ने 'घासलेट और मक्खन' नामक कविता में समाज की उस मनोवृत्ति का यथार्थ चित्रण किया है। कि समाज में आजकल बढ़ती हुई महँगाई में ईमानदारी से जीवन निर्वाह करने पर अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अगर व्यक्ति सत्य, ईमान धर्म, सिद्धान्तों को छोड़कर मिलावट करके व्यवसाय करते है। तो चैन का जीवन जीते है -

'घासलेट' जी से कहें बाबू 'मक्खन' लाल
हे ताऊजी आजकल बुरा हमारा हाल
बुरा हमारा हाल, करें सब ग्राहक शंका,
भारत में बजा रहा अपनी जय का डंका।
चला समय के साथ, शुद्धता-शुचिता त्यागों,
सत्य-धर्म-ईमान-न्याय खूँटी पर टाँगो,
कहँ 'काका' कविराय, ठगो दुनिया मक्कर से,
'चौदह कैरत बनो, खाउ रोटी शक्कर से।' 86

आधुनिक युग में शुद्ध वस्तु का मिलना तो एक कल्पना मात्र है। आज खाध-पदार्थ तो बिना मिलावट के मिलना-मुश्किल है। विषैले पदार्थ में भी मिलावट होने

लगी है। आज मनुष्य में धन लिप्सा के कारण स्वार्थी मनोवृत्ति हो गई है। मिलावट की अधिकता को देखकर काका हाथरसी ने व्यंग्य को प्रस्तुत किया है-

घासलेट बतला रही, हम लाए घी शुद्ध,
इसी प्रश्न पर हो गया, घरवाली से युद्ध।
गैरत के कारण हुआ, बुरा हमारा हाल,
दो आने का संखिया ले आए तत्काल।
ले आए तत्काल, पीसकर फली मारी,
मुँह ढक्कर सो गए, स्वर्ग की कर तैयारी।
कहँ काका कविराय, जान ईश्वर ने रख ली,
नहीं मरे हम, क्यों कि संकिया निकला नकली। 87

शैक्षणिक एवं साहित्यिक मूल्य की दृष्टि से हास्य-व्यंग्य काव्य :

2- शैक्षणिक व्यंग्य

भारतदेश की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के लिए उच्च शिक्षा का होना आवश्यक है। तभी देश उन्नति के मार्ग पर चल सकता है। परन्तु आज के शिक्षा-संस्थाओं की गतिविधियाँ इन्हीं नेताओं के द्वारा नियंत्रित की जाती है। स्कूलों में होने वालीं नियुक्तियाँ इन्हीं लोगो की इच्छा पर और संकेत पर निर्भर करती है। शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। जातिवाद इन शिक्षा संस्थानों पर हावी है। बिना रिश्वत दिये शिक्षा-संस्थानों में नियुक्तियाँ होना मुश्किल है। शिक्षा के क्षेत्र में फैलती हुई विकृतियों से आज के युवकों को निष्कर्मण्य, खोखला और बेरोजगार बना दिया है।

साहित्यकार संवेदनशील प्राणी होता है। चतुर्दिक, वातावरण से प्रभावित होकर समाज-चेतना से परिपूर्ण और किसी निश्चित आदर्श का आकांक्षी साहित्यकार इन विसंगतियों को अनदेखा नहीं कर सकता और आज के हिन्दी हास्य-व्यंग्य साहित्याकारों ने शिक्षा की विसंगतियों पर तीक्षण प्रहार किया है -

1. आज की शिक्षा व्यवसायी बनी :

आज के बदलते हुए सामाजिक परिवेश में शिक्षा का क्षेत्र भी भ्रष्टाचार से अछूता नहीं रहा है। आज व्यक्ति का शिक्षा जैसा अनुभव भी रिश्वत से खरीदा जाने

लगा है। आज रिश्वत से सभी कार्यो को सम्भव किया जा सकता है। शिक्षा की इस बदलती हुई दिशा पर बाबा कानपुरी ने व्यंग्य लिखा है -

रिश्वत में गुण बहुत हैं है यह जिसके पास,
बिना परीक्षा दिए ही, हो जाता वह पास।
हो जाता वह पास नौकरी मिल जाती है।
देकर दो परसेंट, लॉटरी खुल जाती है।
बाबा कवि बर्राय चमक जाती है किस्मत,
एक दीजिए तो लाखो में मिलती रिश्वत। 88

आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक विकृतियों का समावेश हो गया है। आधुनिक युग में युवा पीढ़ी पढ़ने -लिखनें के बाद नौकरी व्यवसाय करते है। अनेक घोटालें करके देश को खोखला करने में लगें है। इस विषय पर लक्ष्मीदत्त तरुण ने व्यंग्य किया है -

छोटे बच्चे को मिट्टी खाता देख,
हमने उसके पिताश्री से कहा -
देखिए ! देखिए ! आपका बच्चा मिट्टी खा रहा है।
बच्चे का बाप बोला -
खाने दे, तेरे बाप का क्या जा रहा है?
अरें ! बच्चा हमारा, भविष्य बना रहा है
हम इसे पढ़ाएंगे -लिखाएंगे
फिर देखना यह चमत्कार दिखाएगा
आज मिट्टी खा रहा है,
फिर हजारों जाएगा
डकार भी नहीं लेगा
करोड़ो में खेलेगा। 89

आधुनिक युग में शिक्षा की स्थिति दयनीय हो गयी है। आज किसी भी शिक्षण-संस्थानों में ईमानदारी नहीं रह गयी है। एकछात्र में मेहनत और टेलेंट पर सफलता पान मुश्किल है। शिक्षा को पैसों से खरीदा जाने लगा है। इस विषय पर पं. सुरेश नीरव ने व्यंग्य लिखा है -

पूछता है कालेजों, में कौन अब टेलेंट को

फेंक 'डोनेशन' फटाफट दाखिला हो जाएगा। 90

आज शिक्षा को व्यवसाय का रुप बना दिया है। स्कूलों कालेजों में छात्रों का एडमिशन शिक्षकों की नियुक्ति बिना रिश्वत के होना मुश्किल हो गया है। इस परिवर्तन पर अशोक अंजुमनें व्यंग्य लिखा है -

एडमिशन जोले रहे है,

चंदे के जोर अधिकार बन छात्र वे होगे रिश्व खोर। 91

2. आज के शिक्षक कर्तव्य विमुख :- वर्तमान युग में अध्यापक अपने कर्तव्यों को भूल गये है। आज के शिक्षकों ने शिक्षा को अपना व्यसाय का रूप दे दिया है। इस बदलती हुई परिस्थितियों पर कवि ऋषि गौड़ ने व्यंग्य किया है।

आज का सफल अध्यापक

जिसकी कक्षा में

छात्र हो कम

किंतु घर पर

संख्या हो व्यापक। 92

आज शिक्षण संस्थाओं में भ्रष्टाचार तीव्र गति से पनपता जा रहा है। आज के अध्यापक अपने कर्तव्य भूलकर पैसें को अधिक महत्व देते है। और पैसों की लालच में घर में ट्यूटन पढ़ाते है। आज के अध्यापकों का चरित्र बदल जाने के कारण उसका प्रभाव आज के छात्रों पर पड़ा। इस वास्तविकता पर अशोक अंजुम ने व्यंग्य लिखा है -

हिटलर के अवतार गुरुजी,

बरसाते अंगार गुरुजी।

ट्यूशन इनसे नहीं पढ़े तो,

फेल करेंगे यार, गुरुजी।

पान तम्बाकू लेने भेंजे,

शिष्यों को बाजार गुरुजी।

'कौन राम का बाप बता दो?

हो जाते लाचार गुरु जी।

करी शरारत, तो कर देंगे,

गाली की बौछार गुरुजी।
सुविधा-शुल्क अगर पा जाए
कर दे नइया पार गुरुजी।
कोर्स खत्म कर दे इस दिन में,
इतने तेज-तर्रार गुरुजी। 93

आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक विकृतियों का समावेश हो गया है। आज के शिक्षक छात्रों के प्रति कर्तव्य भूल गये है। कि शिक्षक के हाथ में आज के युवा वर्ग की वागडोर है। परन्तु शिक्षक गलत हथकण्डों का सहारा लेकर अपना कार्य सिद्ध करते है। आज के समाज में शिक्षा का स्तर दिन पर दिन गिरता जा रहा है। शिक्षा की बदलती हुई परिस्थितियों पर कवि अशोक 'अंजुम' ने व्यंग्य द्वारा कटाक्ष किया है -

इसे देखो
ये अध्यापक है
इसने पर्चे आउट कराये,
ऊँची रकम पर
बच्चे ट्यूशन पढ़ाये,
परीक्षा में सम्बन्धियों के
नम्बर बढ़ाये,
पिछले दिनों एक छात्र
इसके ट्यूशन के
पैसे पचा गया,
एक लव्य की भाँति
अगूँठा तो न दे सका
लेकिन अंगूठा दिखा गया। 94

भारतीय समाज में सिक्षकों का सांस्कृतिक मूल्य पतन होता जा रहा है। भारत में पहले के शिक्षक देश का उत्थान करने में सहायक थे। गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र जिन्होंने इतिहास में गौरवशाली स्थान प्राप्त किया। परन्तु आज के शिक्षक देश को पतन की ओर ले जा रहे है। आज के शिक्षक अपने कर्तव्यों को भूल बैठे है। आज की शिक्षा के क्षेत्र की बदलती हुई परिस्थिति पर अशोक अंजुम ने व्यंग्य लिखा है -

उसने जब शिक्षक को
भ्रष्टाचार के रल-दल में डुबोया
तो मेरा
सारा शरीर झनझना गया
हाय अफसोस।
गुरुओं का गौरवशाली इतिहास
वशिष्ठ,
विश्वामित्र,
द्रौण और चाणक्य से होते हुए
आज
किस शर्मनाक अध्याय तक आ गया
देश का निर्माण करने में
शिक्षकों ने सदैव
महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है
लेकिन आज...
शिक्षा ताक पर रखी है
और आए दिन
गुरु-चेलों में हाथापाई है।
चेले तो चेले है- नादान है
लेकिन आप तो समझदार इन्सान हैं।
आपके मार्ग दर्शन में ही शायद
कहीं कोई कमी है
तभी तो इनके मन-मस्तिष्क पर
धृष्टता की धूल जमी है।
अपने दायित्व का
निर्वाह करने में असमर्थ हो
तो ईश्वर से डरो
पैसे कमाने के लिए
हजारों धंधे पड़े है

हे तथाकथित गुरुओ।

कम से कम

इस पेशें को बदनाम मत करो। 95

आधुनिक युग में शिक्षक अपने कर्तव्यों को भूल गये है। आज के शिक्षक छात्रों को कालेजों में शिक्षा देना भूलकर ट्यूशन पढ़ाते है। आज के शिक्षकों में परिवर्तन देखकर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

वेतन में चेतन चतुर

देत न विधा-दान,

कालिज-शिक्षा से अधिक, ट्यूशन पर दें ध्यान। 96

आधुनिक युग की शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों का पतन तीव्र गति से होता जा रहा है। आज के शिक्षक युवाओं को पतन की ओर ले जा रहे है। शिक्षको ने शिक्षा के क्षेत्र में राजनीति को फैला दिया है। इनके गलत हथकण्डों के प्रयोग से छात्र इनका सम्मान करना भूलगये है। शिक्षा में बढ़ते भ्रष्टाचार पर अशोक अंजुम ने व्यंग्य किया है -

जी.आप टीचर है, पूरे फटीचर हैं

छात्रों की ये लम्बी, फौज लिए फिरते है,

शिक्षा-जगत में भी, राजनीति करते है

पूछो तो कहते है- रोटी के लाले है।

उफ! दिल के काले है पर्चे आउट

'कापी' कराते है शिष्यों के साथ-साथ

पीते पिलाते हैं, मर्यादा गुरुओं की

मिट्टी में डाली है और खुद ही कहते हैं

लड़के मवाली हैं ये घर में ढेर-ढ़ेर

बच्चे बुलाते हैं 'ट्यूशन' पढ़ाते हैं

पूछो तो गाते हैं -

'और कुछ मैं जानता नहीं

दिल है कि मानता नहीं।'97

आधुनिक समाज में अनेक विकृतियों, विद्रूपताओं का समावेश हो गया है। शिक्षक अपने कर्तव्यों से विमुख होकर शिक्षा को व्यवसाय का रूप दे रहे है। शिक्षा

के क्षेत्र में इस बदलते हुए दौर को देकखर कवि राम अभिलाष शुक्ल, ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है -

कक्षा में जो नहीं पढ़ाए,
घर में ट्यूशन हेतु बुलाए।
फेल करे छात्रों को नाहक,
क्यों सखि साजन, ना अध्यापक।

आज शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टता एक विकराल रुप धारण करती जा रही है। आज के अध्यापक अपना सामाजिक सम्मान गंवा बैठे है। क्योंकि आज के शिक्षक शिक्षा को व्यवसाय बनाये हुए है। परीक्षा में उत्तीर्ण करने के लिए हजारों रूपये जमा करा लेते है। आज की शिक्षा पैसों से बिकने लगी है। आज की शिक्षा में बढ़ती हुई विषमताओं के कारण आज के अध्यापक है। इस विषय पर शंकर प्रसाद कर गेती नें व्यंग्य द्रष्टव्य किया है -

उत्कृष्ट अध्यापन के लिये
उनका बड़ा नाम था
पढ़ना पढ़ाना और प्रथम श्रेणी दिलवाना ही
उनका एक मात्र काम था
वर्ष के प्रारम्भ में ही
वे सभी विद्यार्थीयों को
अपनी योजनाएं बताते थे
वे विद्यार्थी अपनी-अपनी सुविधानुसार
उन्हें अपनाते थे
पहला विकल्प था
दौ सौ रुपये मासिक का
ट्यूसन स्वयं पढ़ना
व चार अन्य को पढ़वाना
और नियमित रुप से फीस भी दिलवाना
पास होन की फिर भी कोई गारन्टी न थी
मगर दूसरा विकल्प बहुत ही शार्ट कट था
खर्च थोड़ा अधिक था, मगर फल झटपट था

न ट्यूशन पढ़ने का झंझट न पढ़वाने का
न साल भर कॉलेज आने-जाने का
बस परीक्षा से पूर्व
सिर्फ पांच हजार जमा कराओ
और हल किये प्रश्न-पत्र
परीक्षा में ही पाओ
थोड़ा और खर्च करो तो
प्रथम श्रेणी क्या पूरे देश में
प्रथम आ सकते हो
और सर्वश्रेष्ठ छात्र का
स्वर्णपदक भी पा सकते हो। 99

आधुनिक युग के बदलते हुए परिवेश में सभी क्षेत्रों में परिवर्तन होते दिखाई दे रहे है। आज की सिक्षा में भी अनेक परिवर्तन होते जा रहे है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक के स्वार्थ के लिये जो कार्य संहायक होते है वही कार्य करते है। आज एक आदर्श शिक्षक की भूमिका ओझल हो गयी है। इस विषय पर नरेन्द्र मिश्र (धड़कन) ने व्यंग्य लिखा है -

शिक्षणगण अध्यापन
छोड़ पाठशाला में
भोजन पका रहे हैं.
कुछ बच्चों को
खाना खिला रहे हैं। 100

आज के युग में एक आदर्श शिक्षक मिलना बहुत मुश्किल कार्य हो गया है। आज के शिक्षक कार्य मनोयोग से नहीं करते है। ना ही कभी विद्यालय पहुँचते है। वे अपने अध्यापन कार्य से विमुख है। तो आज का विद्यार्थी शिक्षक दिवस कैसे मना सकता है। आज के शिक्षकों का चारित्रिक मूल्य पतन तीव्र गति से हो रहा है। इस पर आदित्य शर्माने व्यंग्य लिखा है-

इस बालक ने शिक्षक दिवस के दिन
शिक्षक दिवस नहीं मनाया।
मैंने उससे कारण पूछा -

उसने बतलाया -

हम शिक्षक दिवस कैसे मनाते।

हमारे गुरुजी तो-

कभी विद्यालय नहीं आते।

और आज।

जबकि सारा हिन्दुस्तान,

शिक्षक दिवस मना रहा है।

हमारा शिक्षक,

शराब पीकर

सड़क पर लड़खड़ा रहा है।101

आधुनिक युग के शिक्षकों के बदलते हुए चरित्र पर डॉ. सुरेन्द्रवर्मा ने व्यंग्य लिखा है। कि आज के शिक्षक रिश्वत देकर नियुक्तियाँ ले लेते है। वास्तव में उनकी कोई योग्यता नहीं होती है। और न ही शिक्षक अपने छात्रों को योग्यता दे पाते है। इसं प्रकार शिक्षा के मूल्य का पतन हो रहा है।

प्रोफसर बजरंग जी

रोज भंग छानते

अपना विषय छोड़कर

सभी विषय जानते

नियमित पढ़ाने नहीं

अतिरिक्त क्लास माँगते।102

3. आधुनिक युग के छात्रों का सांस्कृतिक मूल्य पतन :

आधुनिक युग में शिक्षण में अनेक विसंगितयों, विद्रुपताओं का समावेश हो गया है। आज आदर्श विद्यार्थी के प्राचीनकालीन आदर्श आज लुप्त हो गये है। उनकी रूपरेखा धूमिल हो गयी है। आज के विद्यार्थी अपने गुरुओं का सम्मान करना, आज्ञा पालन करना भूल गये है। आज के गुरुओं को विद्यार्थियों से कुछ कहने की हिम्मत नहीं है। आज के छात्रों के मूल्य पतन पर कवि आशाकरण 'अटला' ने व्यंग्य किया है।

गुरु ने चेले से कहा लेटे-लेटे

बरसात हो रही है या नहीं बेटे

तो चेले ने कहा कि ये बिल्ली
अभी-अभी बाहर से आयी है
इसके ऊपर हाथ फेरकर देख लीजिए
अगर भीगी हुई हैं,
तो बरसात हो रही है समझ लीजिए।
गुरु ने दूसरा काम कहा कि सोने का समय हुआ
जरा दीया तो बुझा दे बचुआ
बचुआ बोला आप आँखे बंद कर लीजिए
दीया बुझ गया समझ लीजिए।
अंत में गुरु ने कहा हारकर
कि उठ किवाड़ तो बंद कर
तो शिष्य ने कहा कि गुरुवर
थोड़ा तो न्याय कीजिए
दो काम मैने किये है
एक काम तो आप भी कर दीजिए।103

आधुनिक युग की शिक्षा में काफी बदलाव आ गया है। पहले के विद्यार्थी गुरू की आज्ञा पर प्राण न्योछावर करनें को तैयार रहते थे परन्तु आज के गुरू कुछ कहें तो छात्रों की विध्वंशक लीला के अखाड़े बन जाते है। आज गुरु-शिष्य परम्परा का शोभन रुप लुप्त हो गया है। आज की इस वास्तविकता पर कवि ऋषि गौड़ ने व्यंग्य किया है-

आधुनिक विद्यार्थी
एकल्व्य की भाँति
नहीं देता अगूँठा काटकर
बरन्
चुकाता है गुरुदक्षिणा
अगूँठा दिखाकर। 104

आधुनिक युग की शिक्षा का कोई मूल्यत नहीं रह गया है। आज ज्ञान डिगरियाँ पैसों से खरीदी जा रही है। विद्यार्थी अपने कर्तव्यों को भूल गये है। आज के विद्यार्थियों की उच्छृंखलता, उद्दंडता चरम सीमा पर पहुँच गयी है। आधुनिक

युग की शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के पतन को देखकर कवि अशोक अंजुम ने व्यंग्य किया है -

अब शिक्षा के देश में बदल रहे उन्वान।
बिके डिगरियां थोक में, हुआ खोखला ज्ञान॥
कक्षा में गुरुदेव ने, डांटे कालूराम।
अब चौराहे पर पिटें गुरुवर श्री घनश्याम।
अध्यापक जी यों कहें ट्यूशन पढ़ लो आय।
जो कोऊ ट्युशन पढ़े, फर्स्ट डिवीझन पाय॥105

आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक विकृतियों विषमताओं का समावेश हो गया है। इस बिगड़ते हुए परिवेश में आज के विद्यार्थी अपना कर्तव्य भूल गये है कि सरस्वती मंदिर के रूप में माने-जाने वाले विद्यालय में उन्हें आस्था के दीप चलाने थे। अध्यपन करना था। वहाँ पर दादागीरी कर रहे है। गुरुओं का अपमान कर रहे है। परन्तु अपने भविष्य से अनजान छात्र ये नहीं जानते हैं कि उन्हें आज की इस स्थिति पर पछताना पड़ेगा। शिक्षा के मूल्य पतन पर कवि दिनकर सोनवलकर ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है-

जहाँ तुम्हें चढ़ाने चाहिए थें आस्था के फूल
जलाने चाहिए थे
अध्ययन के एकाग्र दीप
उसी सरस्वती मन्दिर में
ऐसा गुनाह?
क्या कमाल है वाह।
इधर तुम भले ही सीना तानकर
दादागीरी दिखाते हो
गुरुजोनों को गालियों का
अशिष्ट तोहफा भेट करते हो
मगर राजनीति की शतरंज में
तुम्हारी हैसियत फक्त एक प्यादे भरकी है
जिस नेताओं के इशारे पर
कभी इधर, कभी उधर

रख दिया जाता है।
लेकिन जब, डिग्री पाने के बाद
तुम बेकारी की धूल फांकते फिरोगे
'तब तुम्हारी मदद को
इनमें से कोई नहीं आएगा।
न आपात काल के तानाशाह
न दूसरी आजादी के मसीहा।'
* * * *
और जब ये अंधा जोश
हवा हो जाएगा–
और विवेक की ज्योति
तुम्हारी आंखो में तमकेगी
तब तुम्हें एहसास होगा
कि काश
तुम्हारे हाथों में
पत्थर की जगह कलम होती
हंसिया–हथौरा होता
पेटिंग का ब्रश
या सितार की मिजराब होती
सर्जरी के औजार
या पुल बनाने का नक्शा होता
जिनसे तुम हिन्दोस्तान की
एक नई तस्वीर बनाते
और हम सबके सपनों को
सच बनाते।
मगर तब तक
बहुत देर हो चुकेगी
और तब कांच के यही टुकड़े
तुम्हारे सीने में भी चुभेगे

लेकिन तुम रो भी नहीं सकोगे। 106

आधुनियक युग में शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। छात्र अपने कर्तव्यों से अनजान पाश्चात्य संस्कृति की तरफ आकर्षित हो रहे है। छात्रों को पढ़नें से अच्छा सिनेमा घरों में लगता है। आज के छात्रों की वास्तविकता पर कवि राम अभिलाष 'शुक्ल' ने व्यंग्य किया है -

पढ़ना-लिखना जिसे न भाए,
कक्षा छोड़ सिनेमा जाए।
लिए चले विधा की अर्थी,
क्यों सीख साजन, ना विद्यार्थी।107

आधुनिक सामाजिक परिवेश में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक विकृतियाँ फैल गयी है। आज के छात्रों का आदर्श इनकी संस्कृति लुप्त हो गयी है। कालेजों में पहुँच कर स्वतन्त्रता से घूमते है। और उनके पास पढ़ने-लिखने का सामान मिलना मुश्किल है- आधुनिक युग के छात्रों के सांस्कृतिक मूल्य पतन पर डॉ. आनंदकुमार ने व्यंग्य किया है -

एक दिन मैं यूनिवर्सिटी गया किसी काम से,
पैन घर पर भूल गया था
सो पूछा एक श्रीमान् से,
महोदय,
क्या आप यहाँ पर पढ़ते हैं?
क्या जरा देर को पैंन दे सकते है?
जबाब मिला
सर सुबह-सुबह क्यों, मज़ाक करते हैं
कहीं यूनिवर्सिटी के छात्र भी पैन रखते है। 108

आधुनिक युग के छात्र पाश्चात्य संस्कृति की तरफ अधिक आकषित होते जा रहे है। आज के छात्र कालेजों में जाते ही भारतीय संस्कृति पढ़ना-लिखना छोड़कर पाश्चात्य सभ्यता का अनुसरण करने लगते है और इनका जीवन अंधकारमय प्रतीत होने लगता है। आधुनिक युग के छात्रों पर कवि योगेन्द्र मौद्गिल ने व्यंग्य किया है -

सीटी वीटी पर नहीं झुकने को तैयार
जय भारत जय भारती, तेरी जय-जयकार

बीयर, बाइक, जींस के सपनों का संसार
मेरे बच्चों को मिला कालेज से उपहार।
नाइट क्लब में बैठकें होटल में विश्राम
दिन विज्ञापित है अगर राते है बेनाम।
दारू मेंबंसुध पिता, बेटे छीले घास
बहना ढूंढ़े नौकरी, अम्मां खड़ी उदास। 109

भारतीय समाज में पाश्चात्य संस्कृति का प्रवेश हो जाने पर आज के युवा छात्र सबसे ज्यादा पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण कर रहे है। छात्रों पढ़ने से अधिक फिल्मों को महत्व देने लगे है। आधुनिक युग में गुरु-शिष्य परम्परा का शोभन समाप्त हो गया है। छात्रों को डाँटने पर छात्र शिक्षकों को पीटने के लिये तैयार हो जाते है। आधुनिक युग का छात्र पाश्चात्य संस्कृति पर पूर्णतः समर्पित है। आज के छात्रों के सांस्कृतिक मूल्य पतन को देखखर कवि प्रेम किशोर पटाखा ने व्यंग्य द्वारा कटाक्ष किया है -

कीड़ा है सर में फिल्म का, घर को उजाड़ दे।
कापी को बेच डाल, किताबों को फार दें।
टोके तुझे जो प्रिंसिपल उसको लताड़ दे।
प्रोफेसर को, पीट के, हुलिया बिगाड़ दे।
ट्यूटर की टांग तोड़ दे, कॉलिज को छोड़ तू।
हीरो बनेगा टॉप का, फिल्मों में दौर तू॥
पढ़ लिख के बेटे तू कहां पाएगा नौकरी।
अब एम. ए. पास तक यहाँ ढ़ोते है टोकरी
सीटी बजा के छेड़, पड़ोसिन की छोकरी।
लोकर कहे जो, उसको दिखा अपनी लोफरी।
खलनायकों की ठाठ से गरदन मरोड़ तू।
हीरो बनेगा, टॉप का, फिल्मों में दौड़तू॥
कॉलेज की लड़कियों के तू उल्लु बनाना सीख।
बनकर लवर तू, प्यार का चक्कर चलाना सीखा
केबिन में रेस्टोरंट के, मिलना-जुलना सीख।
पैरों से अपने, उनका अँगूठा दबाना सीख।

'हिस्ट्री' से या हिसाब से, माथा नफोड़ तू।

हीरो बनेगा 'टॉप'का, फिल्मों में दौड़ तू॥ 110

आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक भ्रष्टाचार फैलाने का श्रेय नेताओं को है। आज के शासक अपने बच्चों को शिक्षकों का सम्मान करना सिखाने की बजायें गलत शिक्षा देते है। जिससे छात्रों को बढ़ावा मिल रहा है। आज के छात्रों की मानसिक प्रवृत्ति बदलती जा रही है। आज की पीढ़ी के छात्र शिक्षकों का सम्मान न करके गौरव का अनुभव करते है। इस विषय पर कवि मिश्री लाल जायसवाल ने व्यंग्य किया है -

मास्टर जी ने कक्षा में
एक नेता के लड़के को मारा,
नेता ने आकर मास्टर जी को फटकारा
मास्टर जी बोले- 'मै आपके लड़के को
अच्छी बातें सिखा रहा था
उसे आदमी बना रहा था'
नेताजी ने कहा -
'मेरा लड़का मेरी तरह नेता बनेगा
वह आदमी बनकर क्या करेगा?' 111

आधुनिक युग में आदर्श विद्यार्थी, उनकी प्राचीन सभ्यता सभी लुप्त हो गये है। वे शिक्षकों का सम्मान करना भूल गये है। आज की शिक्षा प्रणाली परीक्षा-केन्द्रित है, जिसमें छात्र परीक्षा उत्तीर्ण करना ही अपना लक्ष्य मानते है और नकल करने का रास्ता अपनाते है। उनके इस कार्य में बाधा पहुँचाने वाले को वे छुरा-दर्शन करतो है और ऐसा करने पर आज के छात्रों को कोई शर्म नहीं आती है। इस वास्तविकता पर कविन त्रिलोकीशरण 'डंठल' ने व्यंग्य द्रष्टव्य किया है -

आज परीक्षा केन्द्र पर हो जाती है मार।
लाठी-भाले है वहाँ, बम बर्छा, तलवार।
बम,बर्छा-तलवार, नरीक्षक की गर्दनिया,
गुरु है बना कपास और चेला है धुनिया॥
इम्तहान की टेबुल पर गढता है छूरा।
कूटा जाता हाय टोकने वाला चूरा॥

अध्यापक को है रहे विद्यार्थी अब पीट।
सरस्वती के सदन पर बरसाते है ईट॥
बरसाते है ईट खेल हो गई परीक्षा।
शिक्षक को ही शिष्य आज का देता शिक्षा।
गया समय वह खाते थे जब छात्र पिटाई।
शिक्षार्थी करते शिक्षक की आज धुनाई॥ 112

वर्तमान युग में शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार फैलता जा रहा है। आज के छात्र मनमानी करने पर उतर आये है। कालेज में पहुँचकर ये छात्र दादागीरी करते है। आज के जो अध्यापक अपने कर्तव्यों को नहीं करते छात्र उनके पक्ष में रहते है। इस तरह के छात्र कालेजों के माहौल को बिगाड़ देते है और आज शिक्षा के क्षेत्र में सांस्कृतिक मूल्यों का पतन होता जा रहा है इस विषय पर कवि महेश चन्द्र साँख्यधर ने व्यंग्य प्रस्तुत किया है -

ये कालिज के दादा हैं
बनते हैं अति वीर पुरुष पर ये भीतर से मादा हैं।
न ये लीड़र, न ये हीरो ये हीरो के पोंगा हैं।
न घर से न बाहर से हैं, केवल लफूझोंगा है॥
सीधे साधों को ऐंठु हैं, लड़ने वालो के पैठू है।
वे मतलब के ये अधिकारी ताकतवाए को सादा है।
ये कालिज के दादा हैं
ये उनके हैं बने यार जो अध्यापक नाकारा है।
कालिज में न पढ़ते लिखते ये घर से आवार है।
अगर लड़ाई हो मौके पर भगने को आमादा है।
ये कालिज के दादा हैं
नई फेंशन की लिये एजेन्सी,
बनते रईस के ताऊई हैं,
पास में कानी कौड़ी नहीं है,
केवल मुफ्ती खाऊ हैं।
कार्टून सी सूरत वाले
ये खूबसूरत ज्यादा है।

ये कालिज के दादा है। 113

आधुनिक युग के छात्रों की उच्छृंखलता उद्दंडता चरम सीमा पर पहुँच गयी है। छात्रों कों अध्यापकों का डांटना सहन नहीं है। आज के छात्र शिक्षा के तरफ बिल्कुल जागरुक नहीं है। आधुनिक छात्रों का सांस्कृतिक पतन होता जा रहा है इस विषय पर उमांशकर मनमौजी ने व्यंग्य किया है-

परीक्षण कक्ष में छात्र ने
अध्यापक से कहा
गुरु जी अब कट्टा, हथगोला
का जमाना गया
इसलिए आर-डी-एक्स
साध लाया हूँ
यदि आपने मुझे छूने की
गलती की
तो नया चमत्कार दिखाऊँगा
आधे सेकन्ड में
आपके साथ-साथ
पूरी बितिंडग उड़ाऊँगा। 114

वर्तमान युग की शिक्षा में अनेक विकृतियों विद्रूपताओं का समावेश हो गया है। आज के छात्र शिक्षकों का आदर सम्मान करना भूल गये है। यदि शिक्षक छात्रों को गलत करने से रोकते है। तो वे शिक्षक छात्रों के द्वारा पीटे जाते है। आज के समाज में शिक्षकों के सभी अधिकार समाप्त होते जा रहे है। छात्र अपने को श्रेष्ठ मानने लगे है। आधुनिक युग में छात्रों का चारित्रिक पतन होता जा रहा है इस संदर्भ में गोपाल प्रसाद व्यास ने व्यंग्य की अभिव्यक्ति की है -

पर लड़का अड़का पक्का है
बंदूक पकड़ कर अकड़ गया।
बातों ही बातों में संसुरा
चौराहे पर अड़ पकड़ गया।
तुम गुल्लक में पैसे जोड़ो
मैं उड़ती चिड़िया मारूँगा।

ट्यूटर की टाँग उखाड़ूँगा
टीचर को पकड़ पछाड़ूँगा।
नालायक, लड़कें, गुरुओं की
गत कहीं बिगाड़ी जाती है?
चरणों में छुआ जाता है
या टाँग उखाडी जाती है?
या टाँग उखाडी जाती है?
गुरुओं के दिन बीते अंकल
अब चेलों का युग आया है।
गुड़ को अब कौन पूछता है
शक्कर का भाव सवाया है।
वह भी मुझको धमकता`हैं
मैं भी मुझको धमकाते हैं
मै भी उनको ललकारूँगा।
वह गिनकर पैसे लेते है
मैं गिनकर गोली मारूँगा। 115

आधुनिक युग के छात्र अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे है। और पाश्चात्य संस्कृति की तरफ आकर्षित होते जा रहे है। छात्र कालेजों में पढ़ाई कम करते है। फिल्मों को देखकर उसका अनुसरण करते है। इन छात्रों की बदलती संस्कृति पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

लड़का अपने वास्ते करनाहोय सलैक्ट,
कालिज लाइफ से सभी पूछ लीजिये फैक्ट,
पूछ लीजिए फैक्ट, खोलकर दिल दिखलाए,
अब तक जितने खोट किए हो नोट कराए,
कहो हलक से किस-किस पर तुम मरे मिटे हो
किस-किस कन्या से तुम कितनी बार पिटे हो?116

आधुनिक युग में युवा पीढ़ी अपने कर्तव्यों को भूल गयी है। आज के छात्र अपने शिक्षकों का सम्मान करना भूल गये है। इस विषय पर श्याम 'अंकुर' ने व्यंग्य किया है -

जब गुरुओं का होता था सम्मान
झुकते थे-राजा और दरबान
अब तो ऐसे ही डण्डे पड़ेगे
ज्यादा किया तो जेलों में सड़ेगे। 117

आधुनिक युग के छात्रों का चारित्रिक पतन होता जा रहा है। छात्र शिक्षा की तरफ ना जाकर गलत हथकण्डों को अपनाना पसन्द करते है। आज की इस वास्तविकता पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है।

पढ़ना-लिखना है मना,
बनो, डैंजरमैन,
रक्खो पाकिट में छुरा, छोड़ पैसिंल-पैन। 118

आधुनिक युग की शिक्षा-प्रणाली पूर्णतः परिवर्तन होती जा रही है। आज के छात्र अपना सिद्धान्त भूल गये है। वे नकल करके परीक्षा में पास होनां चाहते है। आज के छात्रों पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है-

पढ़ना-लिखना हैल्थ का,
करता सत्यानाश,
नकल करो हो जाउगे, फर्स्ट डिवीजन पास। 119

आधुनिक युग में शिक्षा का महत्व समाप्त हो गया है। आज बिना पढ़े-लिखे व्यक्ति नेता बनकर देश पर शासन करने में लगे है। इस विषय पर काका हाथरसी ने व्यंग्य द्रष्टव्य किया है -

पढ़ने-लिखने में नहीं,
लगात जिनका चित्त,
नेता बनकर फोड़ते, राजनीति की भित्त। 120

आधुनिक युग के छात्रों में प्राचीन आदर्श लुप्त हो गये है. ये छात्र अपने गुरुओं का सम्मान करना भूल गये है। आज के दादा छात्रों से शिक्षक डरने लगे है। आधुनिक युग के बदलते हुए सांस्कृतिक मूल्यों के पतन पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

छात्र पुराने बहुत हैं, करिए उनकी खोजा,
जरा-जरा सी भूल पर, पिटते थे हर रोज।
पिटते थे हर रोज, समय ने करवट बदली,

परंपरा गुरु शिष्यों की कर डाली गँदली।
चेला-चेला जब अपने गुरुओं से डरते,
आज गुरु, दादा टाइप चेलों से डरते। 121

आधुनिक युग में छात्रों का रहन-सहन, सभ्यता बदलती जा रही है। आज की शिक्षा-प्रणाली बदलती जा रही है। छात्र को जो सुविधा जनक लगता है। वहीं करते है। इन बदलती हुई परिस्थितियों पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

बच्चा पढ़ने को चला, चच्चा आए याद,
जितना बोंझा छात्र में, दुगुना बस्ता लाद।
दुगुनावस्तालाद, मिलेगी ढ़ेरों शिक्षा,
खड़े सड़क पर, बस आने की करें प्रतीक्षा।
बड़ें हुए तो बस्ते का क्यों कष्ट उठाएँ,
पुस्तक के कुछ पृष्ठ फाड़कर ही ले जाएँ। 122

वर्तमान में छात्रों पर पाश्चात्य संस्कृति का रंग चढ़ता जा रहा है। आज के छात्र अपना कर्तव्य और सिद्धान्त भूल गयेहै। ये सिनेमा की तरफ आकिर्षत हो रहे है। आधुनिक समय परिवर्तन पर काका हाथरसी ने वास्तविकता प्रस्तुत की है -

पढ़ना-लिखना व्यर्थ है, दिन भर खेलो खेल
होते रहु दो साल तक फर्स्टयर में फेल
फर्स्टयर में फेल, तेल जुल्फों में डाला
साइकलि ले चल दिए, लगा कमरे का ताला
कहँ 'काका' कविराय, गेट कीपर से लड़कर
मुफ्त सिनेमा देख कोच पर बैठ अकड़कर।123

आधुनिक युग में शिक्षा में काफी बलदाव आ गया है। कालेजों का वातावरण बदल गया है। आज के छात्र मनमानी करते है। छात्रों को शिक्षकों के दबाव में रहना पसन्द नहीं है। इस बदलते दौर में गुरु-शिष्य परम्परा समाप्त हो गयी है। गुरुओं के कुछ कहने पर छात्र कालेजों में तोड़-फोड़ करने लगे जाते है। और इसी में नाम कमाकर अपने को श्रेष्ठ समझते है। आज के छात्रों के सांस्कृतिक मूल्य पतन पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

प्रोफेसर या प्रिंसिपल बोले जब प्रतिकूल
लाठी लेकर तोड़ दो, मेज, और स्टूल

मेज और स्टूल, चलाओ ऐसी हाँकी
शीशा और किवाड़ बचें नहिं एकहु बाकी
'काका' कवि दादा बनने का नुस्खा देता
नाम कमाओ बन करके छात्रों के नेता।127

4. आधुनिक शिक्षा पर व्यंग्य :- परिवर्तन शास्वत है। समाज में हमेशा परिवर्तन होते रहते है। भारतीय समाज में पाश्चात्य संस्कृतिक का प्रभाव पड़ने से सभी वर्गों में परिवर्तन होता जा रहा है। शिक्षा का क्षेत्र भी पाश्चात्य प्रभाव से अछूता नहीं रहा है।

आज के छात्र लड़के-लड़कियाँ फिल्मों की तरफ अधिक आकर्षित होते जा रहे है। आज के छात्रों और शिक्षकों शिक्षा से ज्यादा फिल्मों को महत्व देते है - इस वास्तविकता पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है ।

लड़के-लड़की और लेक्चरर
सब फ्लिमी गाने लाएंगे,
हर कालिज में 'सब्जेक्ट' फिल्म
का कंपल्सरी करा दूँगा। 125

आधुनिक युग में शिक्षा का महत्व गिर गया है। युवा पीढ़ी बेरोजगारी के कारण दर-दर की ठोकरे खाती फिर रही है। बिना पढ़े व्यक्ति नेता बनकर देश पर शासन करते है। आज की युवा पीढ़ी इन विपरीत परिस्थितियों को देखकर पढ़ना लिखना छोड़कर फिल्म देखते है घूमते है। इन सांस्कृतिक मूल्य पतन पर काका हाथरसी ने व्यंग्य लिखा है -

नेता का चरित्र अभिनेताओं के चित्र देख,
विद्यार्थियों के रथ के तुरंग भड़के।
एम. ए. बी.ए. करके जो घर में पड़े हुए है।
सोचते है हमने क्या कर लिया है पढ़ के।
अनपढ़ थे वे राजनीति में सफल हुए,
बुद्धु बुद्धिमान हुए कुर्सी पे चढ़ के।
इथ्म की किताबें लिए प्रोफेसर रो रहे हैं ।
फिल्म देखने गए हैं कालिज के लड़के। 126

आधुनिक युग की शिक्षा-प्रणाली पूर्णतः बदलती जा रही है। छात्र परीक्षा में पास होने के कई रास्ते ढूढ़ते है और अपना लक्ष्य नकल करके पूरा करते है परन्तु

अयोग्य रहने पर उन्हें कहीं नौकरी नहीं मिलती है। और नकलजी छात्रों को समाज में दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती है। आधुनिक युग की शिक्षा का कोई महत्व नहीं रहा गया है। आज के इस वास्तविकता पर काका हाथरसी में व्यंग्य किया है -

नकल अकल से बन गए, बाबूजी बी.काम.
शादी का चक्कर चला, अक्कल लगी लगाम,
अक्कल लगी लगाम, सज गए दूल्हा बन के,
हुक्म मिला, काटिय सात चक्कर दुलहन के।
सर्विस के चक्कर में, दर-दर खाई टक्कर,
इतने चक्कर कटें, बने बाबू घनचक्कर।127

आधुनिक शिक्षा में इतनी विषमताओं का समावेश हो गया है कि शिक्षा का कोई महत्व नहीं रहा है। आज के छात्र पैसो से डिग्रियाँ खरीदते है और बेरोजगारी की समस्या बढ़ने पर वह आपेक्षित कार्यो में लग जाते है। आजकी शिक्षा के गिरते मूल्यों की स्थिति पर काका हाथसी ने व्यंग्य किया है-

शिक्षा-दीक्षा मिल गई,
पढ़-लिख हुए निहाल,
इंटर करके खींचते, रिक्शा बाँकेलाल।128

भारतीय समाज में शिक्षा का मूल्य दिन पर दिन गिरता जा रहा है। शिक्षा का कोई महत्व नहीं रह गया है। समाज में बेरोजगारी की समस्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। और आज के शिक्षण स्तर की स्थिति यह है कि पुस्तकें बढ़ती जा रही है। शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती हुई विषमताओं पर मुकेश कुमार जैन 'पारस' ने व्यंग्य लिखा है -

आधुनिक शिक्षा।
अर्थात्
जिसके समाप्त,
होने पर
खींचती पड़ती
है रिक्शा।
आधुनिक
शिक्षा-प्रणाली की

हालत देखो,

कितनी खस्ता है,

बच्चा हटका है,

भारी बस्ता है।129

भारतीय समाज में अनेक विकृतियों, विद्रूपताओं का समावेश हो गया है। आधुनिक पीढ़ी में अनेक परिवर्तन होते दिखाई दे रहे है। आज की पीढ़ी की शिक्षा में भी काफी परिवर्तन दिखाई दे रहें है। छात्र डिग्रियाँ प्राप्त करके बेकार घूम रहे है। कोई धर्म, ईमान नहीं रह गया है। समाज में चारों तरफ भ्रष्टचारकी अधिकता दिखाई देती है। इन विपरीत परिस्थितियों पर कवि सुनील जोगी, ने व्यंग्य किया है -

फटाफटा भूगोल मिलेगा, आने वाली पीढ़ी को
ढोल के भीतर पोल मिलेगा, आने वाली पीढ़ी को
भारी-भारी बस्ते होगे
आँसू सबसे सस्ते होंगे
बच्चे बौने हो जाएँगे
स्वयं खिलौने हो जाएँगे
पढ़े-लिखे बेकार मिलेंगे
हाथों में हथियार मिलेगें
पुण्यन होगा, पाप न होगा
राम नाम का जाप न होगा
मारकाट का बोल मिलेगा, आने वाली पीढ़ि को
ढ़ोल के भीतर पोल मिलेगा, आनेवाली पीढ़ी को
प्यासों की भी रैली होगी,
घरों-घरों में फैक्स लगेगा
साँसो पर भी टैक्स लगेंगा
कप्यूटर कीमाया होगी
चादर नीचे पड़ी मिलेगी
खटिया सबकी खड़ी मिलेगी
सबका बिस्तर गोल मिलेगा, आने वाली पीढ़ी को
ढोल के भीतर पोल मिलेगा; आने वाली पीढ़ी को। 130

आधुनिक युग की शिक्षा व्यवस्था में अनेक विषमताओं का समावेश हो गया है। आज गरीब माता-पिता को बच्चों को पढ़ाना अत्यन्त कठिन कार्य है। एक गरीब अपने बच्चों को पढ़ानें में पैसे खर्च करता है। जब उसे असफलता मिलती है तो उसे जीना मुश्किल हो जाता है। आज की सिक्षा में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर कवि नागाजुर्न ने व्यंग्य किया है

खून पसीना किया बाप ने एक जुटाई फीस,
आँख निकल आई पढ़-पढ़ के नम्बर पाए तीस,
शिक्षामत्री ने सिनेट से कहा 'अजी शाबास'
जीना हो जाता हराम, यदि ज्यादा होते पास
फेल पुत्र का पिता दुखी है, सिर घुनती है माता
जन गन मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता। 131

आधुनिक युग में शिक्षा की स्थिति दिन पर दिन बिगड़ती जा रही है। शिक्षा के क्षेत्र में जो शिक्षक शिक्षा को व्यवसाय का रूप बनाये है। उन्हें सफलता मिलती है और जो ईमानदारी से चलने का प्रयास करते है। उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। आज की शिक्षा में बढ़ती विषयमताओं पर डॉ. इसाफ 'अश्क' ने व्यंग्य लिखा है-

हे वीणावादिनी कर दे
जो शिक्षक नकल में सहायक न हो
उसका ट्रासफर कर दे। 132

भारतीय समाज में शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार का समावेश दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। आज समाज में शिक्षित व्यक्ति बेकार घूम रहे है और अगूंठा छाप देश के शासक शिक्षा मंत्री बन गये है और वे बिना पढ़े-लिखे स्कूल, कोलेज, यूनीवर्सिटी चला रहे है। शिक्षा के इस प्रकार के मूल्य पतन को देखकर कवि महेश चन्द्र सांख्यघर ने व्यंग्य की अभिव्यक्ति की है -

बढ़ी निरक्षता भारी।
जब लोग अगूंठा टेक हो गये।
धसी रसातल को शिक्षा,
जब लोग अधिकतर क्रेक हो गये।
ब्राड काम्ट हो गयी पान्ट

शिक्षा मन्त्री का पद खाली था।
गये सैकड़ों एम. ए. डि. फिल.
किन्तु न कोई भाग्यशाली था॥
सरस्वती बन गयी,
मिनिस्टर एजूकेशन॥
क्यों कि ब्रह्मा से था, उनका कड़ा रिलेशन।
पकड़ हाथ में बाग डोरा
शिक्षा विभाग की।
उन्नति पर डट गयीं,
देश के सभी भाग की॥
बने सैकड़ों इन्टर कालिज,
और हजारों डिग्री हो गये।
खुले विश्व विद्यालय लाखों,
कलचर कृषि के एग्री हो गये।
एजूकेटिड होने पर,
नर नारी एक रेट हो गये।
पल्ला ढोने वाले भी,
मजदूर ग्रेजुएट हो गये। 133

भारतयी समाज में गरीब बच्चों का और ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों पढ़ना-लिखना मुश्किल दिखाई दे रहा है। न ही सरकार इस पर कदम उठा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में का हाल दिन पर दिन बिगड़ता जा रहा है। शिक्षक अपने कर्तव्यों को भूलकर मुक्त की तनख्वाह पा रहे है। भारत की भावी पीढ़ी का क्या हाल होगा आज के शासकों को कोई चिन्ता नहीं है। आज की शिक्षा की विषमताओं पर आदित्य शर्मा ने व्यंग्य किया है ।

एक दिन मैंने-
ग्रामीण विद्यालय का भ्रमण किया।
वहाँ के दृश्य ने मेरा दिल दहला दिया।
विद्यालय क्या-
बच्चों के लिए अभिशाप था।

उसमें एक ही कमरा -

उसका भी छप्पर साफ था।

टाट-फट्टी कहीं नहीं थी।

अध्यापकों का अता-पता न था।

चपरासी के भरोसे विद्यालय लगा था।

मैने चपरासी से पूँछा -

अध्यापकगण कहाँ है?

उसने बताया -

कुछ तो सरकारी काम कर रहे हैं।

सबको गिना रहा हूँ।

अपासे विनती कर रहे हैं।

मैंने चपरासी से वर्णन सुना।

अपना माथा धुना। सोचा-

इस विद्यालय के विद्यार्थी

सचमुच ही विधा की अर्थी ढो रहे हैं।

किसी और पर नहीं

अपने भाग्य पर रो रहें हैं।

यदि यहीं रहा-

ग्रामीण विद्यालयों का हाल।

तो क्या करेगा -

मेरे देश का नौनिहाल। 134

आज के आपाधापी युग में व्यक्ति को अपना जीवन निर्वाह करना मुश्किल पड़ रहा है। युवा पीढ़ी डिग्रियाँ प्राप्त करते है। जीवन भर डिग्रियाँ लिये घूमते रहते है। लेकिन नौकरी नहीं मिलती है। आधुनिक युग की शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती विषमताओं पर शैल चतुर्वेदी ने व्यंग्य लिखा है -

जब कोई नौजवान डिग्री लटकाये

रोजगार दफ्तर के चक्कर लगाये

और लगाते-लगाते उसकी उम्र निकल जाये

तो व्यवस्था बीमार है

और यह एज्यूकेशनल बलात्कार है। 135

आधुनिक युग की शिक्षा में अनेक विषमतायें बढ़ गयी है। भारत में प्राचीन समय में गुरु-शिष्य परम्परा का विशेष महत्व था। शिक्षा प्राप्त करना एक उच्च श्रेणी में रखा जाता है। परन्तु आज डिग्रीयाँ प्राप्त करना खेल हो गया है। आज के छात्र अपने सिद्धान्तों को भूल बैठे है। शिक्षा के क्षेत्र में इन विपरीत परिस्थितियों पर डॉ. किशोर काबरा ने व्यंग्या किया है -

दीपक की पीढ़ी ने
चर डाले वदे और जासूसी उपन्यास
एक साथ, बिना किए भेद-भाव।
व्यास द्वन्द्व समास बने
भौंक रहे व्याकरण की गलियों में
अदकचरा नंगापन।
अर्जुन का गण्डीव।
मिट्टी की चिड़िया को कोर्स से निकाल दिया,
द्रोण स्वयं मिट्टी की मूरत बन बैठ गए कुर्सी पर।
'अर्जुन उस डाली पर तुमको क्या दिखता है।
डिग्री, फिर नौकरी,
फिर बच्चे, फिर बच्चे, फिर बच्चे, फिर।।
बस-बस बस छोड़ो वह बाण
और लेलो प्रमाण-पत्र।
एकल्व्य बेचारा
कटे हुए अंगूठे को लेकर
बस घूम रहा
ऑफिस-दर ऑफिस में,
कागज-दर कागज में,
फाइल-दर फाइल में।
ज्ञान के दरखतों से
झरते प्रमाण पत्र
झर-झर-झर, झर, झर-झर,

बच्चे फल टपक रहे

टप-टप-टप टप टप टप।

डाल-डाल गुरुडम है, पात-पात पुरनम है,

मेरे इस भारत में पतझर का मौसम है। 136

आधुनिक युग में शिक्षा का महत्त्व गिरता जा रहा है। आज के छात्र अपने कर्तव्यों से विमुख होकर बाह्य वातावरण में अधिक संलग्न है। उन्हें अपने भविष्य की कोई परवाह नहीं है। शिक्षा के गिरते हुए स्तर पर डॉ. गोपाल बाबू शर्मा ने व्यंग्य लिखा है -

कॉलेज के लॉन में अपनी-अपनी,

किताब-काँपियों का बिछा कर आसन,

जुड़ी कुछ छात्रों की जमात, होने लगी आपस में बात -

हमारे नए सर हैं बहुत अच्छे,

निकाल देते हैं जरा सी बात पर, क्लास से बाहर।

इससे मिल जाता है हमें घूमने-फिरने का

एनज्वाँय करने का, और अधिक अवसर।' 137

5. कवि सम्मेलन : -

आधुनिक युग में कवि-सम्मेलनों में भ्रष्ट नीति काम करने लगी है। संयोजक पैसे कमाने के लिये कवि-सम्मेलन करते हैं। इसमें शिक्षा का प्रचार शिक्षा के क्षेत्र में प्रोत्साहन न मिलकर व्यवसाय का रूप मिल गया है।

आधुनिक युग के कवि सम्मेलनों में छीटांकसी की जाती है। आज के कवि-सम्मेलनों में श्रोताओं के आने का अपना उद्देश्य होता है। वे कवि-सम्मेलनों में उपदेश सुनने नहीं जाते, वरन् अपना मनोरंजन करने आते है। आधुनिक युगमें कवि-सम्मेलनों में सभी प्रकार की बुद्धि वाले व्यक्ति आते है। इसीलिए कविता सोच-समझ कर करना चाहिए। कि कविता के भाव श्रोताको समझ में आ सके। नहीं तो कवि सम्मेलन निरस्त हो जाते है। आज शिक्षा के क्षेत्र में फैलती विषमताओं पर शैल चतुर्वेदी ने व्यंग्य किया है -

एक कवि सम्मेलन में

ऐसे श्रोता मिलगए

जिनकी कृपा से

कवियों के कलेजे हिल गए
एक अधेड़ कवि ने जैसे ही गाया
उनका चेहरा गुलाब क्या कहिए।
सामने से आवाज आई–
'लेने आए जुलाब क्या कहिए।'
और कविजी
जुलाब का नाम सुनते ही
अपना पेट पकड़कर बैठ गए
दूसरे कवि ने माइक पर आते ही
भूमिका बनाई –
'न तो कवि हूँ न कविता बनाता हूँ।'
आवाज आई –
'वो क्या बेवकूफ बनाता है भाई।'
चमचों से घिरे हुए
'शोर' मचाते
'पूरब को पश्चिम' से मिलाते
और क्रांति, के गीत गुनगुनाते
कविवर नौटंकीलाल
कवियों को दाँत दिखाकर
जनता की ओर घूम समझकर
उससे झूम गए
बोलो– 'हाँ तो मेरी जान, मेरे गीत
लो, सुन लो
मेरी नई–नई फिल्म का घांसू गीत।
'अर र र र र र हुई
मेरे दिल का पिंजरा छोड़ के
हो मत जाना फुर्र
अरे रे मेरी सोन चिरैया।'
आवाज आई– 'यहाँ सब पढ़े–लिखे हैं भैया।'

तभी कोई चिल्लाया
'सांप, सांप, सांप'
और सारा पंडाल
हो गया साफ
कवि सम्मेलन ध्वस्त होने के पश्चात्
किसी कवि ने संचालक से पूछा
'क्यों गुरु ! जूतों का कहीं पता है।'
संचालक बोला – 'जूतों को मारों गोली
संयोजक लापता है।' 138

वर्तमान में होने वाले कवि-सम्मेलनों पर डॉ. सुरेन्द्र वर्मा ने व्यंग्य किया है। कि आज कवि-सम्मेलनों का महत्व नहीं रहा है। क्योंकि संयोजक की ईमानदारी नहीं रहीहै। और न ही कवि श्रोताओं को आकर्षित कर पाते है। श्रोताओं को संन्तुष्टि नहीं मिल पाती है -

किसी तरह आमंत्रित हुए हैं
जोड़-तोड़ कर
बैठे है स्टेज पर
मनहूसित ओढ़कर
पूरी हास्य गोष्ठी के
व्यंग्य है श्री बोरकर। 139

आधुनिक युग ने कवि-सम्मेलनों का उद्देश्य बदल गया है। भ्रष्ट नीति का प्रयोग किया जाने लगा है। कवि-सम्मोलनों में श्रोताओं का उद्देश्य शोर मचाना अपना मनोरंजन करना है। श्रोताओं के अनुसार कवितायें होने पर कवि-सम्मेलन की समाप्ति हो जाती है। कवि-सम्मोलनों की इन विषमताओं पर कवि उमाशंकर 'मनमौजी' ने व्यंग्य किया है-

कवि सम्मेलन में गये, कविवर श्री घनघोर।
'बोर-बोर का मच गया, कविचा सुनकर शोर।।
कविता सुनकर शोर, खड़े थे माइक आगे।
जूते-चप्पल, बूट लोग बरसाने लागे।
'मनोमौजी' अब कविता करना छोड़ दिया है,

'घनघोर जूता हाउस'- वहाँ खोल दिया है॥ 140

भारतीय समाज में कवि-सम्मेलनों की प्रथा बहुत पुरानी है। पर आज इनका महत्व कम हो रहा है। आज के कवि श्रोताओं को आकर्षित नहीं कर पा रहे है। सभी कवियों को सफलता नहीं मिलती। कुछ कवि मंच पर हूट कर दिये जाते है और कवि-सम्मेलन का उस समय का वातावरण दूषित हो जाता है विषय पर अल्लड़ बीकानेरी ने व्यंग्य किया है -

मै हूँ दत्तक पुत्र आपका मुझे चाहिए शरण पिताजी
ठुकराया तो कर बैठूँगा
मैं अनशन आमरण पिताजी
हिन्दी की कविता का मुझको
समझा दो व्याकरण पिताजी
फूहड़ कवि कल रात मंच पर
फैला गए धोक में कचरा
कभी नहीं देखा था ऐसा
दूषित पर्यावरण पिताजी। 141

काका हाथरसी ने आज के कवि-सम्मेलनों को लेकर अपने काव्य में छीटा कशी की है। आज कल कवि-सम्मेलनों में भ्रष्ट नीति काम करती है। कवियों को मान-सम्मान से बुलाया जाता है। लेकिन पैसे देने में संयजोक उतनी ही आनाकानी करते है। आज कवि-सम्मेलनों में कवियों को बुलाया जाता है उनकी प्रशंसा की जाती है और जब उन्हें पारिश्रमिक देने की बारी आती है। तो संयोजक जी अदृश्य हो जाते है:

कवि-सम्मेलन में गए कविवर बेटा ढार
पहुँचे तो स्वागत हुआ, पड़े गले में हार
पड़े गले में हार, प्रशंसा अग्रिम पाई,
फोटो खीचे गए, चाय भरपेट पिलाई
कहँ 'काका' जब पूरा सब प्रोग्राम हो गया
छोड़ मंच, संयोजक अंतर्धान हो गया।
तीन बज गए रात्रि के, नहीं मिले श्रीमान
छूँछ गली की पूँछ पर, उनका मिला मकान,

उनका मिला मकान पड़ गया चेहरा काला
दरवाजे पर लहक रह, छह लीवर ताला।142

काका कवि ने कवि सम्मेलनों पर व्यंग्य किया है कि आज कवि-सम्मेलनों में कवि अपना ऐसा रूप बनाये रहते है। कि श्रोता उनका मजाक बनाते है। और कवितायें भी ऐसी करते है। कि श्रोताओं की सुनने से रुचि हट जाती है।

शिमला में हमको मिले प्रोफेसर 'घडियाल'
सफाचट्ट थी खोपड़ी, इधर-उधर कुछ बाल
इधर-उधर कुछ बाल, लगी चंदन की बिदी
बोल रहे थे आधी इंगलिश, आधी हिंदी
काका ! कवि-सम्मेलनों में कुछ हैल्प कराओं
जमने वाले हिन्दी के पोइट बतलाओ।143

आधुनिक युग में कवि सम्मेलनों का महत्व कम होता जा रहा है। आज के श्रोताओं का उद्देश्य कवि-सम्मेलन में मनोरंजन करना होता है। इसलिए वही कवि सफल हो पाता है जो श्रोताओं के मनोविज्ञान को देखते हुए काव्य-पाठ करे। आजकल गंम्भीर कविता मंच पर जम नहीं पाती है। कवि-सम्मेलनों का उद्देश्य मानव जगत् का काव्य-साहित्य के प्रति रुचि बढ़ाना है। आज के श्रोताओं को तभी रुचि हो सकती है। जब कविता की भाषा और भाव समझ में आ सके। भाषा-भाव बहुत गम्भीर होगें तो समझने के लिए उच्च-बौद्धिक वाले व्यक्ति होने चाहिए। कवि-सम्मेलनों में सभी प्रकार के बुद्धि वाले कवि आते है। इसलिए सरल ने सस्ती कविता में इसी तथ्य पर प्रकाश डाला है।

सस्ती कविता जम गई, नहीं समझना झूठ।
जब महँगी कविता पढ़ी, तभी हो गए हुट।
तभी हो गए हूट, कट गए पत्रम्-पुष्पम्
अपने पैरों आप कुल्हाड़ी क्यों मारे हम?
काका उन श्रोताओं को उपदेश न भाएँ,
सम्मेलन में जो मनोरंजन करने आएँ।144

साहित्यिक व्यंग्य :- भारतीय समाज में साहित्यकार समाज की परिस्थितियों से आकर्षित होकर समाज के समक्ष स्थिति को उजागर करता है। आज का कवि भी पाश्चात्य संस्कृति की तरफ अधिक आकर्षित है। साहित्य के क्षेत्र में काम न करके

फिल्मों के लिए काम करने में गर्व अनुभव करता है। समाज में कोई भी क्षेत्र पाश्चात्य संस्कृति से अछूता नहीं रहा। इस संदर्भ ने रामचन्द्र सरोज ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है-

बहुत पीड़ित हूँ सुनो हे बन्धु,
चरणतल पर नत पड़ा साहित्य का यह सिन्धु।
नित नये आयाम की है खोज,
आजकल मस्तिष्क मेरा बहुत उर्वर हो गया है
काटनी पड़ती मुझे कोई फसल हर रोज।
कीर्ति श्री अब बढ़ रही निःशंक,
पश्चिमी साहित्य-धुन पर नाचता हूँ
थामकर कितनी विधाओं की
लचीली लंक।
प्रेम कविताएँ, लिखीं,
कुछ युवतियाँ पागल दिखी,
मुझे लेकर जो हुई रस्साकशी तो
बाल सिर के झड़ गए
अब भी कलाई में चुभे हैं चूड़ियों के डंक।
है बुलावा आ रहा प्रतिनिद
'फिलिम' से,
क्या करिश्मा कर दिया मैने 'इलिम' से,
रेडियोवाले ने माने -
आ रहे मुझको मनाने,
हाय, कविसम्मेलनों में
शब्द मेरे खूब ठोकर मारते हैं
लोग मेरे नाम से घर भागते हैं। 145

*

अध्याय - 6

संदर्भग्रन्थ-सूचि

1. हास्य-विनोद काव्य कोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास पृ. 159-161
2. हास्य-विनोद काव्य कोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास पृ. 189
3. हास्य-विनोद काव्य कोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास पृ. 350
4. व्यंग्यमेव जयते योगेन्द्र मौद्‌गिल पृ- 28-30
5. दमदार और दुमदार दोहे हुल्लड़ मुरादाबादी पृ. 43
6. क्या हम समझते नहीं है आशाकरण अटल पृ. 57-58
7. क्या हम समझते नहीं है आशाकरण अटल पृ. 61
8. क्या हम समझते नहीं है आशाकरण अटल पृ. 119
9. खुल्लम खुल्ला अशोक अंजुम पृ.
10. खुल्लम खुल्ला अशोक अंजुम पृ. 24
11. खुल्लम खुल्ला अशोक अंजुम पृ.'
12. खुल्लम खुल्ला अशोक अंजुम पृ.150
13. 1988 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराज शरण पृ. 84
14. 1989 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराज शरण पृ. 30
15. 1990 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराज शरण पृ. 15
16. 1990 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराज शरण पृ. 45
17. 1992 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराज शरण पृ. 35-36
18. 1994 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराज शरण पृ. 13
19. हास्य कवि दरबार प्रेम किशोर पटाखा पृ. 114-115
20. मज़ा मिलेनियम पं. सुरेश नीरव पृ. 26
21. हँसता खिलखिलाता हास्य-कवि सम्मेलन प्रेम किशोर पटाखा पृ. 51
22. रंग चकल्लस अंक 1 जनवरी-मार्च 1997 पृ. 21, असीम चेतन
23. कलामे हकीम ले सम्राट पृ. 8
24. गिद्ध भोज् राम किशोर महेता पृ. 96
25. हँसी ाती है शैल चतुर्वेदी पृ. 101,102, 103
26. हँसो बत्तीसी फाड़ के प्रेम किशोर पटाखा पृ. 12
27. लूटनीति मंथन करी, काका हाथरसी पृ. 10
28. लूटनीति मंथ करी पृ. 92
29. लूटनीति मंथन करी पृ. 123
30. काका की फुलझडियाँ पृ. 50
31. काका की फुलझड़ियाँ पृ. 51
32. काका की फुलझडियाँ पृ. 57
33. काका की फुलझड़ियाँ पृ. 77
34. काका की फुलझड़ियाँ पृ. 81
35. काका की फुलझड़ियाँ पृ. 83
36. काका की फुलझड़ियाँ पृ. 88
37. काका की फुलझड़ियाँ पृ. 112
38. काका की फुलझड़ियाँ पृ. 30
39. जय बोलो बेईमान की काका हाथरसी पृ. 39
40. जय बोलो बेईमान की काका हाथरसी पृ. 80
41. जय बोलो बेईमान की काका हाथरसी पृ. 112

42. हास्य भी व्यंग्य भी अशोक अंजुम पृ. 33
43. काका के कारतूस पृ. 143
44. काका की कचौपाल काका हाथरसी पृ. 43
45. काका के कारतूस पृ. 27
46. काका के चौपाल पृ. 116
47. काका की फुलझड़ियाँ पृ. 53
48. जय बोलो बेईमान की काका हाथरसी पृ. 9
49. जय बोलो बेईमान की काका हाथरसी पृ. 10
50. जय बोलो बेईमान की पृ. 59
51. काका के कारतूस पृ. 28
52. काका के कारतूस पृ. 31
53. हास्य-विनोद काव्य केश पं. गोपाल प्रसाद व्यास पृ. 317
54. हास्य-विनोद काव्य कोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास पृ. 408
55. अच्छा है पर कभी-कभी हुल्लड़ मुरादाबादी पृ. 41
56. लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य कविताएँ अशोक अंजुम पृ. 12
57. लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य कविताऐं पृ. 29, 30, 31, 32
58. लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य क्वताऐं अशोक अंजुम प-. 61
59. खुल्लम खुल्ला असोक अंजुम पृ. 146
60. 1192 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाऐं डॉ. गिरिराजशरण पृ 53
61. हास्य कवि दरबार, प्रेम किशोर पटाखा पृ. 65
62. हास्य-व्यंग्य के विविध रंग, बरसाने लाला चतुर्वेदी पृ. 86
63. हँसी के रंग कवियों के संग प्रेम किशोर पटाखा पृ. 26
64. सोतो है अशोक चक्रधड पृ. 27, 28, 29
65. घाट-घाट घूमे अल्लड़ बीकानेरी पृ. 28
66. हास्य-व्यंग्य भारती अक्टूबर-मार्च 2001 पृ. 4 डॉ रामगोपाल सिंह
67. रंग चकल्लस अप्रैल -जून 1995 पृ. 67 असीम चेतन
68. टुकड़े-टुकडे सोच जय कुमार रुसवा पृ. 105
69. हॅसी आती है शैल चतुर्वेदी पृ. 28-29
70. हॅसी आती है शैल चतुर्वेदी पृ. 98
71. शैल चतुर्वेदी हँसी आती है पृ. 83
72. हॅसो बत्तीसी फाड़ के प्रेम किशोर पटाखा पृ. 38-39
73. काका की महफिल, काका हाथरसी पृ. 29
74. खुल्लम खुल्ला, अशोक अंजुम पृ. 150
75. भोले-भाले अशोक चक्रधड़ पृ. 77-78-79
76 दूधो नहाओं पूतो फलो डॉ. गोपाल बाबू शर्मा पृ. 19
77. हास्य-विनोद काव्य कोश पं. प्रेम किशोर पटाखा पृ. 185
78 श्रेष्ठ-हास्य-व्यंग्य कविताएँ काका हाथरसी गिरिराजशरण पृ. 99-100
79. श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कतिवाएँ काका हाथरसी गिरिरराजशरण पृ. 100
80. लूटनीति मंथन करी काका हाथरसी पृ. 53
81. हास्य-सागर पं. गोपाल प्रसाद व्यास पृ. 233
82. चेतन-चुटकी आदित्य शर्मा चेतन पृ. 72
83. काका के कारतूस काका हाथरसी पृ. 144
84. काका की फुलझडियॉ काका हाथरसी पृ 12
85. काका की फुलझडियॉ पृ. 42

86. काका की फुलझडियाँ पृ. 70
87. काका की फुलझड़ियाँ पृ. 67
88. व्यंग्यमेव जयते योगेन्द्र मौदगिल पृ. 113
89. 1989 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ डॉ.य गिरिराजशरण पृ. 69
90. मजा मिलेनियम पं. सुरेश नीरव पृ. 61
91. हास्यभी व्यग्य भी अशोक अंजुम पृ. 35
92. हास्यभी व्यग्य भी अशोक अंजुम पृ. 35
93. खुल्लम खुल्ला असोक अंजुम पृ. 42
94 खुल्लम खुल्ला असोक अंजुम पृ. 47
95. खुल्लम खुल्ला असोक अंजुम पृ. 92-93-94
96. लूटनीति मंथन करी, काका हाथरसी पृ. 131
97. खुल्लम खुल्ला अशोक अंजुम पृ. 130
98. 1992 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य कविताएँ डॉ. गिरिराजशरण पृ. 73
99. हॅसता खिलखिलाता हास्य कवि सम्मेलन प्रेम किशोर पटाखा पृ. 15
100. समय का शंख नरेन्द्र मिश्र (धडकन) पृ. 38
101. चेतन-चुटकी आदित्य शर्मा चेतन पृ. 64
102. राग रटराग डॉ. सुरेन्द्र वर्मा पृ. 41
103. क्या हम समझते नहीं है आशा करण अटल पृ. 40
104. श्रेष्ठ-हास्य व्यंग्य कविताएँ काका हाथरसी गिरिराजशरण पृ. 39
105. खुल्लम खुल्ला असोक अंजुम पृ. 113
106. 1989 की श्रेष्ठ हास्य-व्य्म्य रचनाएँ डॉ. गिरिराजशरण पृ. 38-39-40
107. 1992 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराजशरण पृ. 73
108. 1994 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराजशरण पृ. 31
109. 1996 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराजशरण पृ. 51
110. हॅसता खिलखिलाता हास्य-कवि सम्मेलन प्रेम किशोर पटाखा पृ. 79
111. हास्य-व्यंग्य के विविध रंग डॉ. बरसाने लालचतुर्वेदी पृ. 63
112. हास्य-व्यंग्य के विविध रंग डॉ. बरसाने लालचतुर्वेदी पृ. 69
113. समय की रेलपेल महेश चन्द्र साँख्यधर पृ. 10
114. हॅसो बत्तीसी फाड़ के (एक हास्य कवि सम्मेलन) प्रेम किशोर पटाखा पृ-.29
115. हास्य सागर पं. गोपाल प्रसाद व्यास पृ. 247
116. काका की महफिल काका हाथरसी पृ. 12
117. नई गुदगुदे जनवरी, फरवरी मार्च, 2003, पृ. 26. विश्वभर लोदी
118. लूटनीति मंथन करी काका हथरसी पृ. 84
119. लूटनीति मंथन करी काका हाथरसी पृ. 84
120. लूटनीति मंथन करी पृ. 84
121. काका की महफिल पृ. 139
122 काका की महफिल पृ. 134
123. काका की महफिल पृ. 47
134. काका की फुलझडियाँ काका हाथरसी पृ. 47
125. यार सप्तक काका हाथरसी पृ. 15
126. यार सप्तक काका हाथरसी पृ. 54
127. काका के कारतूस पृ. 26
128. लूटनीटि मंथन करी काका हाथरसी पृ. 133
129. हास्य-व्यंग्य के विविध रंग डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी पृ. 155

130. 1996 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ डॉ. गिरिराजशरण पृ. 62-63
131. हास्य-व्यंग्य भारती जनवरी-मार्च 2000 पृष्ठ 2.
132. हास्य-व्यंग्य भारती अप्रैल-सितम्बर 2000 पृ. 6
133. समय की रेलपेल महेशचन्द्र सौख्यधर पृ. 5
134. चेतन- चुटकी आदित्य शर्मा चेतन प-. 83-86-87
135. हँसी आती है शैल चतुर्वेदी पृ. 40
136. टूटा हुआ शहर डॉ. किशोर काबरा पृ. 31-32
137. दूधो नहाओं पूतों फलों डॉ. गोपाल बाबू शर्मा पृ. 14
138. हँसी आती है शैल चतुर्वेदी पृ. 59-66-67
139. राग-खटराग डॉ. सुरेन्द्रवर्मा पृ. 17
140. हँसो बपत्तीसी फाड़ के प्रेम किशोर पटाखा पृ. 28
141. अब तो आँसू पोछ अल्हड़ बीकानेरी पृ. 58
142. काका की फुलझडियाँ पृ. 65
143. काका की फुलझड़ियाँ पृ. 93
144. जय बोलो बेईमान की काका हाथरसी पृ. 51
145. उल्टा टँगा हुआ प्रजातंत्र रामचन्द्र सरोज पृ. 28-29